संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
ऋषि प्रसाद
हिन्दी
मूल्य : ₹ ६
१ सितम्बर २०१२
वर्ष : २२ अंक : ३
(निरंतर अंक : २३७)
ईश्वरीय सत्ता का चमत्कार !
पूज्य संत श्री आशारामजी बापू
हेलिकॉप्टर में लगी आग
सच्चे संत अर्थात् परमात्मा के प्रचंड सामर्थ्य का भंडार... ! उनका संकल्पबल क्या नहीं कर सकता ! इस संदर्भ में अनगिनत उदाहरण हमें वेद-शास्त्र एवं पुराणों में देखने को मिलते हैं । गोधरा (गुज.) में दि.२९-८-२०१२ दोपहर को हेलिकॉप्टर के तीन टुकड़े होकर पुर्जा-पुर्जा बिखर जाने व आग पकड़ने पर भी उसमें सवार पूज्य बापूजी, पायलट एवं अन्य भक्तों का बाल भी बाँका नहीं हुआ ।
यह ईश्वरीय सत्ता का चमत्कार नहीं तो और क्या है ?
TV9 MAHARASHTRA
सदी के सबसे भाग्यशाली व्यक्ति आशारामजी बापू
- न्यूज चैनल 'टीवी९'
अब और कैसा चमत्कार चाहिए ? - श्री अशोक सिंहल
'विश्व हिन्दू परिषद' के मुख्य संरक्षक व पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
पूज्य बापूजी को दैवी शक्ति प्राप्त है - श्री राजनाथ सिंह
भा.ज.पा. के वरिष्ठ सांसद, शीर्ष नेता व पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
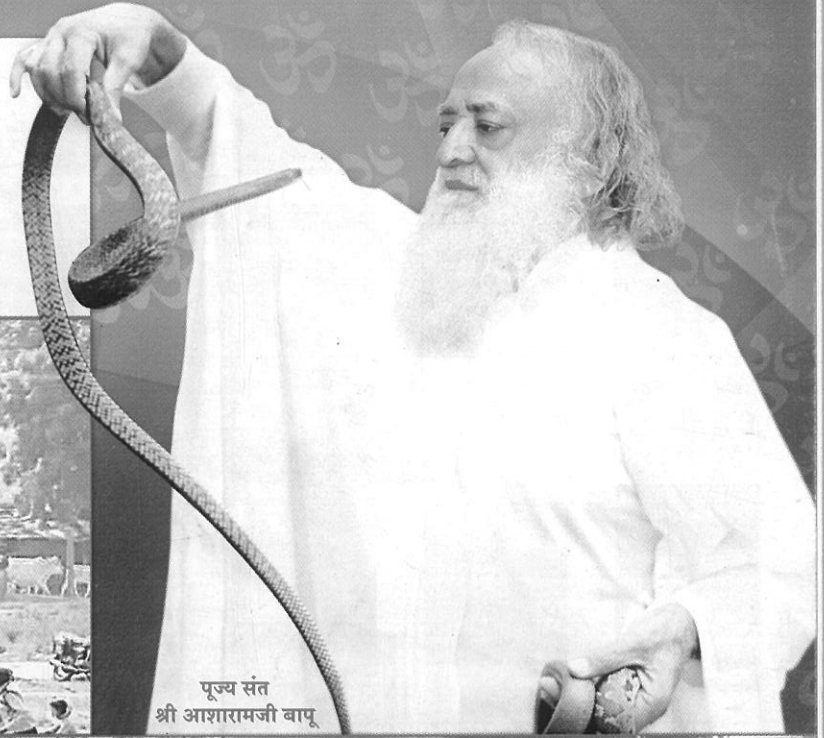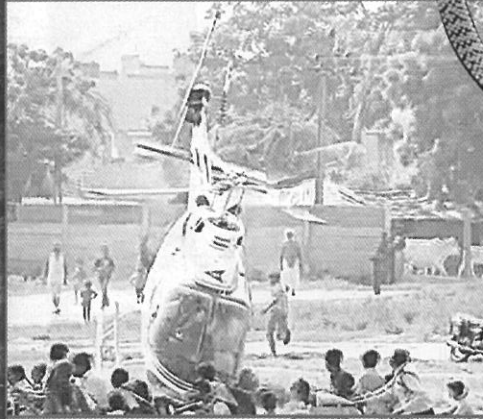
पूज्य बापूजी की अमृतवाणी से ओतप्रोत सत्साहित्य
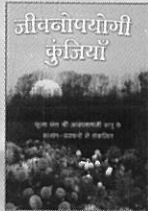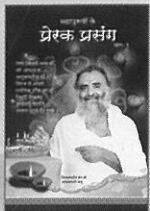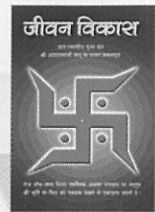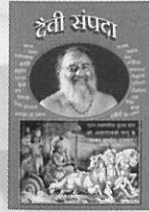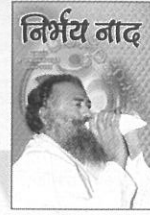
✻ डी.डी. या मनीऑर्डर भेजने का पता ✻

महिला उत्थान ट्रस्ट, सत्साहित्य विभाग, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, अहमदाबाद-३८०००५. सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३०/८८

ध्यान दें : ✻ नजदीकी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से सत्साहित्य आदि लें तो डाक खर्च बच जायेगा। ✻ डी.डी./मनीऑर्डर के साथ अपनी माँग, नाम, पता, दूरभाष क्रमांक आदि स्पष्ट रूप से लिखें। ✻ वी.पी.पी. सेवा उपलब्ध नहीं है।

पूज्य बापूजी के जीवन, उपदेश और योगलीलाओं पर आधारित

ऋषि दर्शन

आध्यात्मिक मासिक विडियो मैगजीन

इसमें आप पायेंगे पूज्यश्री के वर्तमान व पूर्व के सारभूत सत्संग, पर्व-महिमा, पुण्यदायी तिथियाँ, स्वास्थ्य की कुंजियाँ, दुर्लभ लीलाएँ व और भी बहुत कुछ...

सदस्यता शुल्क : वार्षिक - ₹ ४५०   पंचवार्षिक - ₹ १९००

डी.डी., मनीऑर्डर व चेक 'महिला उत्थान ट्रस्ट' के नाम अहमदाबाद में देय होगा।
पता : संत श्री आशारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-०५. सम्पर्क : (०७९) २७५०५०१०/११
e-mail: contact@rishidarshan.org

पूज्य बापूजी की अनमोल स्वास्थ्य-कुंजियों के साथ...

DVD VIDEO

योगासन

सभी स्वस्थ रहना चाहते हैं, तंदुरुस्ती के नुस्खे पाना चाहते हैं तो लीजिये, आसन-प्राणायाम का लाभ योगासन डीवीडी के साथ और स्वस्थ रहें - मस्त रहें।

एक ही डीवीडी में हिन्दी, अंग्रेजी संस्करण

संत श्री आशारामजी आश्रम के सत्साहित्य केन्द्रों पर विशेष छूट के साथ उपलब्ध।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २२ अंक : ३
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २३७)
१ सितम्बर २०१२ मूल्य : रु. ६-००
अधिक भाद्रपद-भाद्रपद वि.सं. २०६९

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद - ३८०००५ (गुजरात).
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	रु. ६०/-	रु. ७०/-
द्विवार्षिक	रु. १००/-	रु. १३५/-
पंचवार्षिक	रु. २२५/-	रु. ३२५/-
आजीवन	रु. ५००/-	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	रु. ३००/-	US $ 20
द्विवार्षिक	रु. ६००/-	US $ 40
पंचवार्षिक	रु. १५००/-	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org
: www.rishiprasad.org

इस अंक में...

हेलिकॉप्टर दुर्घटना या दैवी चमत्कार !

वैसे तो हेलिकॉप्टरों की दुर्घटनाएँ पहले भी कितनी हो चुकी हैं और अक्सर होती ही रहती हैं पर इतिहास में ऐसा आज तक नहीं हुआ कि १०० फुट की ऊँचाई से अनियंत्रित हुआ हेलिकॉप्टर नाक के बल जमीन पर गिरे, उसके परखच्चे उड़ जायें पर उसमें बैठे लोगों को खरोंच तक न आये। बिल्कुल यही नजारा दि. २९ अगस्त २०१२ को गोधरा (गुज.) में हजारों लोगों को प्रत्यक्ष देखने को मिला।

पूज्य बापूजी पूर्णिमा दर्शन-सत्संग कार्यक्रम हेतु मोरबी से गोधरा जिस हेलिकॉप्टर से आ रहे थे, वह गोधरा में उतरते समय अनियंत्रित होकर नाक के बल जोरदार धमाके के साथ जमीन पर गिरकर कई टुकड़ों में टूटकर बिखर गया पर बापूजी, जो आगे की सीट पर ही बैठे थे तथा पायलट व अन्य भक्त बाल-बाल बच गये, किसीको खरोंच तक नहीं आयी। देखनेवाले दंग रह गये कि हेलिकॉप्टर के तो टुकड़े-टुकड़े हो गये, भारी-भरकम लोहे का तो पुर्जा-पुर्जा अलग होकर दूर-दूर तक बिखर गया लेकिन अंदर बैठे बापूजी के कोमल शरीर का पुर्जा-पुर्जा चुस्त-तंदुरुस्त ! यह ईश्वरीय सत्ता का चमत्कार नहीं तो और क्या है ?

यह तो वैज्ञानिक भी जानते हैं कि हेलिकॉप्टर में प्रयोग होनेवाला व्हाइट पेट्रोल अति ज्वलनशील होता है। जरा-सी चिंगारी पड़ते ही भयंकर आग देता है, आसपास के पेड़-पौधे तक जला देता है। हादसे के बाद हेलिकॉप्टर से वह अति ज्वलनशील व्हाइट पेट्रोल नल की धारा की तरह बह रहा था फिर भी विस्फोट नहीं हुआ। हेलिकॉप्टर के पिछले हिस्से में आग भी लग चुकी थी किंतु वह बहुत ही आश्चर्यजनक ढंग से गायब हो गयी।

इस हादसे की आवाज इतनी अधिक थी कि उसे सुनकर आसपास के क्षेत्रों के निवासी घटना-स्थल पर दौड़कर आये। लेकिन सभीने देखा कि पूज्य बापूजी अन्य भक्तों के साथ बिल्कुल सुरक्षित बाहर आये। न ही कोई रक्तचाप जाँचने की जरूरत, न ही हृदयगति जाँचने की जरूरत। शीघ्र ही बापूजी पहुँचे सत्संग-स्थल पर और अपनी हमेशा की अलमस्ती में सत्संग किया। इतनी बड़ी बात हो गयी लेकिन बापूजी वैसे ही, बिल्कुल सहज रूप से सत्संग करते चले जा रहे थे, भक्तों को हँसते-खेलते, नाचते-नचाते हुए आनंदरस छलका रहे थे। इसे हम चमत्कार न कहें तो फिर क्या कहें ? यह आत्मतत्त्व में जगे हुए एक ब्रह्मज्ञानी, आत्मारामी संत की महिमा का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं तो और क्या है ?

कोई इसे एक ब्रह्मनिष्ठ अवतारी महापुरुष का चमत्कार कह रहा है तो कोई ईश्वर की दिव्य लीला, कोई इसे योग-सामर्थ्य का चमत्कार बता रहा है तो कोई वैदिक संस्कृति और सनातन धर्म की महानता। शब्द चाहे जिसके जो भी हों किंतु यह तो स्पष्ट हो गया है कि भगवत्प्राप्त संत पूज्य बापूजी ने अपने ही इस वचन को साकार कर दिया है - ''चीन की दीवाल प्रसिद्ध है, कुवैत का पेट्रोलियम प्रसिद्ध है, अमेरिका के डॉलर प्रसिद्ध हैं लेकिन भारत की सनातन वैदिक संस्कृति के संत भगवदीय सामर्थ्य के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं।''

आज देश ही नहीं दुनियाभर के लोग इंटरनेट व चैनलों द्वारा हेलिकॉप्टर दुर्घटना के इस जीवंत दृश्य को देखकर दाँतों तले उँगली दबा रहे हैं।

निवर्तमान राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटील ने दुर्घटना के बाद बापूजी का कुशल समाचार दूरभाष पर पूछने के दौरान बताया कि एयरफोर्स के कई आला अधिकारियों से इस तरह की भयंकर दुर्घटना में सभी लोगों के बच जाने का कारण

आज तक हुए हेलिकॉप्टर हादसों में यात्रियों की स्थिति

दिनांक	स्थान	दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों की स्थिति
९ मई २००१	बोमड़िला (अरुणाचल प्रदेश)	शिक्षामंत्री डेरा नैतुंग सहित ४ अन्य की मृत्यु
२ सितम्बर २००९	रुद्रकोडु हिल (आंध्र प्रदेश)	मुख्यमंत्री वाय.एस.आर. रेड्डी सहित ४ अन्य की मृत्यु
१९ नवम्बर २०१०	बोमडिर (अरुणाचल प्रदेश)	१२ लोगों की मृत्यु
२ फरवरी २०११	जाचक नगर, नासिक (महा.)	२ लोगों की मृत्यु
१९ अप्रैल २०११	तवांग (अरुणाचल प्रदेश)	१७ लोगों की मृत्यु
३० अप्रैल २०११	कायला के पास का पर्वतीय क्षेत्र (अरुणाचल प्रदेश)	मुख्यमंत्री दोर्जी खांदो सहित ४ अन्य लोगों की मृत्यु
१३ मई २०११	सिरोही (राजस्थान)	पायलट के साथ ३ लोगों की मृत्यु
३० अगस्त २०१२	जामनगर (गुजरात)	९ लोगों की मृत्यु

पूछा तो सभीने एक स्वर से कहा कि यह एकमात्र बापूजी का चमत्कार ही था वरना ऐसी दुर्घटना में किसीके बचने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता !

दुर्घटना के तत्काल बाद विभिन्न टीवी चैनल इसमें सभीके निरापद बच जाने को बापूजी का चमत्कार ही बता रहे थे । विभिन्न समाचार पत्रों ने भी इसे एक अद्भुत, विलक्षण, चमत्कारिक घटना बताया ।

''इस हादसे में हेलिकॉप्टर के तीन टुकड़े हो गये लेकिन आशारामजी पूरी तरह सुरक्षित हैं, यह एक चमत्कार ही मान सकते हैं ।''

– 'जी न्यूज' चैनल

''इस सदी के सबसे भाग्यशाली व्यक्ति रहे आशारामजी बापू ।'' **–'टीवी ९' न्यूज चैनल**

''इस हेलिकॉप्टर प्रकरण से भगवान ने बस, अपना चमत्कार ही दिखाया है ।''

– 'हिन्दुस्तान' समाचार पत्र

''जिस प्रकार का यह हादसा हुआ है, उसमें सबका बच निकलना किसी आश्चर्य से कम नहीं !'' **– 'एबीपी' न्यूज चैनल**

''हादसे में बापू चमत्कारिक रूप से बच निकले ।'' **– 'दि पायोनियर' समाचार पत्र**

''ब्रह्मज्ञानी महाकाल को काल भी प्रणाम करके चला गया ।'' **– दैनिक 'आचरण'**

इस घटना के कारण आज विश्व की तमाम हस्तियाँ, बुद्धिजीवी वर्ग, अन्य धर्मों के लोग तथा नास्तिक समुदाय भी पूज्य बापूजी का लोहा मान रहे हैं । हेलिकॉप्टर की यह दुर्घटना बापूजी के आलोचकों की आँखें खोलने के लिए पर्याप्त है ।

पूज्य बापूजी इस दुर्घटना को मंत्र-विज्ञान का चमत्कार बताते हुए कहते हैं कि ''वैदिक मंत्रों में इतनी शक्ति है कि जापक अपनी अकाल मृत्यु तो टाल ही सकता है, साथ के लोगों की भी रक्षा कर सकता है ! गुरुगीता का पाठ करनेवाले की अकाल मृत्यु टल जाती है । उसकी महिमा का बखान करते हुए भगवान शंकर ने कहा है : **अकालमृत्युहंत्री च सर्वसंकटनाशिनी ।''**

बापूजी ने अपने सत्संग-प्रवचनों में मंत्रजप की महिमा बताते हुए कितनी ही बार बताया है कि मंत्रजप की अमुक संख्या होने से जन्म-कुंडली का अमुक स्थान शुद्ध हो जाता है । जैसे - ८ करोड़ मंत्रजप से जन्म-कुंडली का मृत्यु-स्थान शुद्ध होता है, जिससे जापक की कभी अकाल मृत्यु नहीं हो सकती ।

आज भारत ही नहीं पूरे विश्व में इस घटना की चर्चा हो रही है और जो भी सुनता है पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सामर्थ्य और महिमा से अभिभूत हो जाता है।

आशारामजी बापू के चमत्कार से ही हम लोग बिल्कुल सही-सलामत हैं

– दुर्घटनाग्रस्त हेलिकॉप्टर का पायलट

''हेलिकॉप्टर में लैंडिंग के वक्त क्या समस्या हुई वह तो जाँच के बाद पता चलेगा। यह तो आशारामजी बापू का चमत्कार ही है कि हेलिकॉप्टर की इतनी बुरी दुर्घटना हुई है और हम लोग बिल्कुल सही-सलामत हैं। बापूजी के आशीर्वाद से किसीको कोई खरोंच तक नहीं आयी।''

बापूजी की आभा के प्रभाव से मौत के मुँह से हँसते-खेलते बाहर निकल आये

– हेलिकॉप्टर यात्री अश्विन यादव, राजकोट

''मेरा पूर्व-जीवन में बाइक पर भी दो-तीन बार हादसा हुआ था लेकिन इतनी निर्भयता नहीं थी जितनी इस हेलिकॉप्टर हादसे में बापूजी के साथ मैंने अनुभव की। इतना बड़ा जानलेवा हादसा हुआ किंतु बापूजी की आभा के प्रभाव से हम हँसते-खेलते मौत के मुँह से बाहर निकल आये, मौत का जरा भी भय नहीं लगा।

पहले मैं बापूजी को शरीररूप में भजता था पर अब मुझे अनुभव हो गया है कि बापूजी साक्षात् पालनहारे, तारणहारे ही हैं।

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।

'गीता' में जिनकी महिमा श्रीकृष्ण गाते हैं, बापूजी वही हैं।''

यह तो मेरे लिए भगवान का प्रत्यक्ष दर्शन

– नरेश मंगनाणी, प्रत्यक्षदर्शी

''ऐसी घातक दुर्घटना में सभीका बचाव यह तो मेरे लिए भगवान का प्रत्यक्ष दर्शन ही है।'' ❑

अब और कैसा चमत्कार चाहिए ?

– 'विश्व हिन्दू परिषद' के मुख्य संरक्षक व पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल

''परम पूज्य बापूजी ! हमारे संतों के विरुद्ध नास्तिकों का बड़ा भारी षड्यंत्र चल रहा है। मैं तो यह देख रहा हूँ कि संतों पर जो आरोप लगाये जा रहे हैं, वे सब एक षड्यंत्र के नाते लगाये जा रहे हैं। वह षड्यंत्र गुजरात में, तमिलनाडु में कामयाब है और दूसरे स्थानों पर भी वही हाल है। हम लोग ऐसे ही विदेशी शक्तियों के षड्यंत्र के बीच में बहुत फँसे हुए हैं। **हमारे लोग भी उस षड्यंत्र को समझते ही नहीं हैं। उस षड्यंत्र के शिकार हैं सब।** नास्तिक होने के कारण बड़ी आसानी से शिकार हो जाते हैं।

अभी पूज्य बापूजी का प्रभाव किस प्रकार का है, यहाँ दिख रहा है। ये करोड़ों-करोड़ों लोग आपके सान्निध्य में सत्संग का रसपान कर सुख-शांति का प्रसाद पा रहे हैं। लेकिन विडम्बना है कि इस देश को धर्मनिरपेक्ष घोषित कर लोगों को अपनी पहचान बतायी जाती है कि हम नास्तिक हैं, धर्मविहीन हैं। यह कैसा संस्कृति को मिटाने का प्रयत्न चल रहा है !''

सत्संग-आयोजन में अवरोध उत्पन्न करनेवाले तत्त्वों की और उन पर अंकुश लगाने के स्थान पर सत्संग-आयोजनकर्ताओं को परेशान करनेवालों की कड़े शब्दों में भर्त्सना करते हुए हिन्दुओं के सबसे बड़े एवं शक्तिशाली संगठन

वि.हि.प. के मुख्य संरक्षक-मार्गदर्शक तथा पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहलजी ने कहा :

''मेरा मन तो बहुत दुःखी है, बहुत दुःखी ! मैं बोलता हूँ कि कुछ असामाजिक तत्त्व आकर सत्संग में अवरोध उत्पन्न करने लग गये तो क्या आपके 'कानून और व्यवस्था' में समस्या हो रही है ? क्या उस स्थान पर बापू का सत्संग नहीं हो सकता है ? महाराजजी ! मुझको तो यही दुःख होता है कि ये विदेशियों के षड्यंत्र न समझते हुए आपको कितना कष्ट दे रहे हैं, अन्य संतों को कितना कष्ट दे रहे हैं !

हमारे संतों का जीवन सुरक्षित नहीं है कहीं भी। हिन्दू समाज सुरक्षित नहीं है। आज उसकी रक्षा करनेवाला कोई नहीं है। अब ऐसी परिस्थिति में हम लोग तो यही आशा करते हैं **बापूजी ! कि हमारे संतों ने ही आज तक इस देश की रक्षा की है, समाज की रक्षा की है। आप ही पर हमारा विश्वास है कि आप ही कुछ करेंगे तो इस देश के भीतर परिवर्तन होगा।''**

पूज्य बापूजी : ''अब आपकी इन बातों से और समाज में जो अत्याचार हो रहा है वह देखकर हमको एक आध्यात्मिक सम्पुट देकर कोई कार्यक्रम घड़ना पड़ेगा, जिससे हमारी संस्कृति का सामर्थ्य संस्कृति के पुजारियों को तो मिलेगा और संस्कृति-विरोधियों को भी संत-शक्ति का एहसास कराना पड़ेगा। बहुत सारी शक्तियाँ हैं हमारी संस्कृति में, यौगिक शक्तियाँ, केवल हम थोड़ा संगठित हो जायें और एक-दूसरे को समझकर इस दिशा में काम करने लगें। वे हमें मिटाना चाहते हैं तो हम भी उतने ही दृढ़ बनते जायें।

यह आज का दिन शायद आपके चित्त की चिंता, हिन्दू धर्म के ऊपर षड्यंत्र और अत्याचार हो रहा है उसके विषय में परम सत्ता से जुड़कर काम करने की प्रेरणा देनेवाला दिन होगा। परम सत्ता के आगे साजिश करनेवालों का कोई महत्त्व ही नहीं होता, केवल हम परम सत्ता से जुड़कर चल पड़ें।''

जनवरी २०१३ में प्रारम्भ हो रहे प्रयाग महाकुम्भ में हिन्दू सशक्तिकरण में महती भूमिका निभाने हेतु बापूजी को आमंत्रण देते हुए अशोक सिंहलजी ने कहा :

''बापूजी ! प्रयाग में महाकुम्भ है। वहाँ तो सभी आध्यात्मिक संगठन एवं जनसमाज संगठित होकर इकट्ठे होते हैं और बापू ! आप कुछ करेंगे तो वहाँ बहुत कुछ निर्णय हो पायेगा। बड़ी भारी हेलिकॉप्टर दुर्घटना में भी बिल्कुल सुरक्षित रहने का जो चमत्कार आपके साथ हुआ है, उसको सारी दुनिया ने देख लिया है।''

नास्तिक, निंदक और असामाजिक तत्त्वों को चिमकी देते हुए सिंहलजी ने सवाल किया कि ''अब तुम्हें और कौन-सा पर्चा चाहिए ? और कैसा चमत्कार चाहिए ? अब अपनी हरकतों से बाज आ जाओ।''

पूज्य बापूजी : ''आपका संकल्प निःस्वार्थ संकल्प है, परहित का संकल्प है और अब यह अकेले आपका संकल्प नहीं है, मेरा भी संकल्प आपके संकल्प के साथ जुड़ गया है और मेरे करोड़ों भक्तों का संकल्प भी आज आपके संकल्प के साथ जुड़ रहा है। इसलिए वे शुभ दिन आयेंगे, आयेंगे, आयेंगे और पक्का-ही-पक्का आयेंगे।''

पूज्य बापूजी को दैवी शक्ति प्राप्त है

– भा.ज.पा. के वरिष्ठ सांसद, शीर्ष नेता व पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह

''मैं अपना शीश झुकाकर परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के चरणों में शत-शत प्रणाम करता हूँ। मैं जानता हूँ इस सच्चाई को, चाहे इस भारत का कोई मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री क्यों

न हो, पूरी पार्टी के द्वारा यदि उनकी कोई सार्वजनिक सभा आयोजित करनी हो, तब भी इतना बड़ा जनसमूह इकट्ठा नहीं किया जा सकता जितना बड़ा जनसमूह आज परम पूज्य बापूजी के दर्शन के लिए यहाँ पर अपनी आँखों के सामने देख रहा हूँ । सुबह ७ बजे से दोपहर १२.३० तक इतनी भीड़ जुटी रहे ऐसा किसी भी मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री की सभा में नहीं हो सकता, जो मैं यहाँ देख रहा हूँ ।

भारत धर्मप्रधान देश है, भारत अध्यात्मप्रधान देश है। मनुष्य के व्यक्तित्व का समग्र विकास केवल भौतिक विकास के द्वारा नहीं हो सकता बल्कि उसके साथ आध्यात्मिक विकास भी होना चाहिए । परम पूज्य बापूजी के देशभर में तथा दुनिया के दूसरे देशों में जो प्रवचन चलते हैं, उनके द्वारा इसी अध्यात्म की प्रेरणा हम सबको मिलती रहती है। मैं पुनः उनके चरणों में शीश झुकाकर उन्हें हृदय की गहराइयों से प्रणाम करता हूँ ।

भारतीय संस्कृति में आस्था रखनेवाले लोगों पर इस परमात्मा की असीम कृपा है कि इतनी बड़ी हेलिकॉप्टर दुर्घटना हुई और परम पूज्य बापूजी और उनके सहयोगियों का बाल भी बाँका नहीं हो पाया। हमारे परम पूज्य बापूजी को दैवी शक्ति प्राप्त है । परमात्मा ने उनके अंदर जो शक्ति समाहित की है, उसीका ही यह करिश्मा था । उसीका यह परिणाम था कि परम पूज्य आशारामजी बापू और उनके किसी भी सहयोगी को रंचमात्र भी चोट नहीं लगी है । मैंने ऐसी दुर्घटना कभी अपने जीवन में नहीं देखी थी । जिसने भी इस दुर्घटना को टेलीविजन पर देखा, सभी यह मान चुके थे कि इसमें कोई बचा नहीं होगा लेकिन क्षणभर में ही देखा होगा आप लोगों ने ईश्वर की महती अनुकम्पा से बिल्कुल सही-सलामत हमारे सबके आस्था व विश्वास के केन्द्र परम पूज्य संत आशारामजी बापू अपने सहयोगियों के साथ बाहर आये और आज प्रत्यक्ष हम सभी लोग अपने चक्षुओं से उनका दर्शन कर रहे हैं ।''

दुनिया में यह ऐसा पहला चमत्कार है

– अखिल भारतीय आतंकवाद विरोधी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मनिंदरजीत सिंह बिट्टा

''दुनिया के अंदर करोड़ों लोगों की आस्था के प्रतीक बापू आशारामजी हैं । बड़े-बड़े मंत्री, मुख्यमंत्री जिनके पास सत्ता थी, उनके हेलिकॉप्टर गिरे तो कोई नहीं बचा लेकिन बापूजी के साथ इतना बड़ा हादसा हुआ और किसीको भी एक कंकड़ की भी चोट नहीं आयी ! यह दुनिया में इस प्रकार का पहला चमत्कार है ।

जिन लोगों ने बापूजी के सत्संग में विघ्न डालकर, उनके सत्संगियों को सताकर महाराजजी के हृदय को ठेस पहुँचाने की कोशिश की है और करोड़ों जनता का दिल बार-बार दुखाया है, आज उनको समझ लेना चाहिए कि यह चमत्कार है ! चमत्कार है उस भगवान का, बापूजी का चमत्कार है ! अब तो भइया ! दिल मत दुखाओ । अब लोगों को एक नयी शिक्षा, एक नयी सोच देने के लिए बापूजी की तरफ जरूर देखो और आप भी एक नयी सोच की तरफ बढ़ो ।'' ❑

पुण्यदायी तिथियाँ

* **मंगलवारी चतुर्थी : १८ सितम्बर रात्रि ११-५९ से १९ सितम्बर के सूर्योदय तक**
* **गणेश चतुर्थी-कलंक चतुर्थी : १९ सितम्बर रात्रि ९-१० तक चन्द्रदर्शन निषिद्ध**
* **रविवारी सप्तमी : ७ अक्टूबर सूर्योदय से रात्रि १२-०६ तक**

सर्वसाफल्यदायी साधना

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

इस बार चतुर्मास के निमित्त मैं एक ऐसी साधना लाया हूँ कि तुम केवल पाँच मिनट रात को सोते समय और पाँच मिनट सुबह उठते समय यह साधना करोगे तो जो भी तुम्हारी साधना है उसका प्रभाव सौ गुना हो जायेगा और छः महीने के अंदर तुम समाधि का प्रसाद पा सकते हो। ईश्वर की शरणागति का सामर्थ्य तुम्हारे जीवन में छलक सकता है। साक्षात्कार की मधुरता का स्वाद तुम ले सकते हो।

क्या करना है कि रात को सोते समय पूर्व की तरफ अथवा तो दक्षिण की तरफ सिर करके सोयें। पश्चिम या उत्तर की तरफ सिर करके सोओगे तो चिंता, बीमारी, विषाद पीछा नहीं छोड़ेंगे। सीधे लेट गये। फिर श्वास अंदर गया तो 'ॐ', बाहर आया तो गिनती। फिर क्या करना है कि पैर के नख से लेकर शौच जाने की इन्द्रिय तक आपके शरीर का पृथ्वी का हिस्सा है, पृथ्वी तत्त्व है। शौच-इन्द्रिय से ऊपर पेशाब की इन्द्रिय के आसपास तक जलीय अंश की प्रधानता है और उससे ऊपर नाभि तक अग्नि देवता की, जठराग्नि की प्रधानता है। बाहर की अग्नि से यह विलक्षण है। नाभि से लेकर हृदय तक वायु देवता की प्रधानता है। इसलिए हृदय, मन वायु की नाईं भागता रहता है और हृदय से लेकर कंठ तक आकाश तत्त्व की प्रधानता है।

रात को जब सोयें तो पृथ्वी को जल में, जल को तेज में, तेज को वायु में और वायु को आकाश में लीन करो। फिर लीन करनेवाला मन बचता है। फिर मन जहाँ से स्फुरित होता है, मन को अपने उस मूल स्थान 'मैं' में लीन करो - शांति... शांति...। जैसे सागर की तरंगें शांत करो तो शांत सागर है, ऐसे ही 'शांति... शांति...' ऐसा करते-करते ईश्वरीय सागर में शांति का अभ्यास करते-करते आप सो गये। 'सब परमात्मा में विलय हो गया, अब छः घंटे मेरे को कुछ भी नहीं करना है। पाँच भूत, एक शरीर को मैंने पाँच भूतों में समेटकर अपने-आपको परमात्मा में विलय कर लिया है। अब कोई चिंता नहीं, कुछ कर्तव्य नहीं, कुछ प्राप्तव्य नहीं है, आपाधापी नहीं, संकल्प नहीं। इस समय तो मैं भगवान में हूँ, भगवान मेरे हैं। मैं भगवान की शरण हूँ...' - ऐसा सोचोगे तो भगवान की शरणागति सिद्ध होगी अथवा तो चिंतन करो, 'मेरा चित्त शांत हो रहा है। मैं शांत आत्मा हो रहा हूँ। इन पाँच भूतों की प्रक्रिया से गुजरते हुए, पाँच भूतों को जो सत्ता देता है उस सत्ता-स्वभाव में मैं शांत हो रहा हूँ।' इससे समाधि प्राप्त हो जायेगी। अथवा तो 'इन पाँचों भूतों को समेटते हुए मैं साक्षी ब्रह्म में विश्राम कर रहा हूँ।' तो साक्षीभाव में आप जाग जायेंगे। अथवा तो 'इन पाँचों को समेटकर **सोऽहम्...** मैं इन पाँचों भूतों से न्यारा हूँ, आकाश से भी व्यापक ब्रह्म हूँ।'

ऐसा करके सोओगे तो यह साधना आपको पराकाष्ठा की पराकाष्ठा पर पहुँचा देगी। बिल्कुल सरल साधना है। १८० दिनों में एक दिन भी नागा न हो। शरणागति चाहिए, भगवद्भाव चाहिए, साक्षीभाव चाहिए अथवा ब्रह्मसाक्षात्कार चाहिए - सभीकी सिद्धि इससे होगी।

रात को सोते समय यह करें और सुबह जब

उठें तो कौन उठा ? जैसे रात को समेटा तो सुबह जाग्रत करिये। मन जगा, फिर आकाश में आया, आकाश का प्रभाव वायु में आया, वायु का प्रभाव अग्नि में, अग्नि का जल में, जल का पृथ्वी में और सारा व्यवहार चला। रात को समेटा और सुबह फिर जाग्रत किया, उतर आये। बहुत आसान साधना है और एकदम चमत्कारी फायदा देगी। सोते तो हो ही रोज और जागते भी हो। इसमें कोई विशेष परिश्रम नहीं है, विशेष कोई विधि नहीं है। केवल १८० दिनों में एक दिन भी नागा न हो; करना है, करना है, बस करना है और आराम से हो सकता है।

आपकी नाभि जठराग्नि का केन्द्र है। अग्नि नीचे फैली रहती है और ऊपर लौ होती है। तो ध्यान-भजन के समय जठराग्नि की जगह पर त्रिकोण की भावना करो और चिंतन करो, 'इस प्रदीप्त जठराग्नि में मैं अविद्या को स्वाहा करता हूँ। जो मेरे और ईश्वर के बीच नासमझी है अथवा तो जो वस्तु पहले नहीं थी और बाद में नहीं रहेगी, उन अविद्यमान वस्तुओं को, अविद्यमान परिस्थितियों को सच्चा मनवाकर जो भटकान कराती है उस अविद्या को मैं जठराग्नि में स्वाहा करता हूँ : **अविद्यां जुहोमि स्वाहा**।' अर्थात् नासमझी की मैंने आहुति दे दी।

अविद्या का फल क्या होता है ? अस्मिता, देह को 'मैं' मानना। देह को 'मैं' मानते हैं तो अस्मिता का फल क्या होता है ? राग, जो मेरे हैं उनके प्रति झुकाव रहेगा और जो मेरे नहीं हैं उनको मैं शोषित करके इधर को लाऊँ। राग जीव को अपनी असलियत से गिराता है और द्वेष भी जीव को अपनी महानता से गिराता है। तो **अस्मितां जुहोमि स्वाहा**। 'मैं अस्मिता को अर्पित करता हूँ।' **रागं जुहोमि स्वाहा**। 'मैं राग को अर्पित करता हूँ।' **द्वेषं जुहोमि स्वाहा**। 'द्वेष को भी मैं अर्पित करता हूँ।' फिर आखिरी, पाँचवाँ विघ्न आता है, अभिनिवेश - मृत्यु का भय। मृत्यु का भय रखने से कोई मृत्यु से बचा हो यह मैंने आज तक नहीं देखा-सुना, अपितु ऐसा व्यक्ति जल्दी मरता है। **अभिनिवेशं जुहोमि स्वाहा**। 'मृत्यु के भय को मैं स्वाहा करता हूँ।'

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश - ये पाँच चीजें जीव को ईश्वर से अलग करती हैं। इन पाँचों को जठर में स्वाहा किया। शुरू में चाहे सात मिनट लगें, फिर पाँच लगेंगे, चार लगेंगे; कोई कठिन नहीं है।

अगर सगुण भगवान को चाहते हो तो सगुण भगवान की शरणागति छः महीने में ही सिद्ध हो जायेगी। अगर समाधि चाहते हो तो छः महीने में समाधि सिद्ध हो जायेगी। अगर निर्गुण, निराकार भगवान का साक्षात्कार चाहते हो तो भी छः महीने के अंदर सिद्ध हो जायेगा। इसमें कुछ पकड़ना नहीं, कुछ छोड़ना नहीं, कुछ व्रत नहीं, कुछ उपवास नहीं, बहुत ही युक्तियुक्त, कल्याणकारी साधना है। ❑

स्वाति के मोती

✻ वास्तव में प्रारब्ध से रोग बहुत कम होते हैं, ज्यादा रोग कुपथ्य से अथवा असंयम से होते हैं। कुपथ्य छोड़ दें तो रोग बहुत कम हो जायेंगे। ऐसे ही प्रारब्ध से दुःख बहुत कम होता है, ज्यादा दुःख मूर्खता से, राग-द्वेष से, खराब स्वभाव से होता है।

✻ चिंता से कई रोग होते हैं। कोई रोग हो तो वह चिंता से बढ़ता है। चिंता न करने से रोग जल्दी ठीक होता है। हरदम प्रसन्न रहने से प्रायः रोग नहीं होता, यदि होता भी है तो उसका असर कम पड़ता है।

सनातन धर्म का पर्व : श्राद्ध

(श्राद्ध पक्ष : २९ सितम्बर से १५ अक्टूबर)

श्राद्धकर्म श्रद्धा-सम्पाद्य है। जो इसको करता है उसमें श्रद्धा का उदय होता है और उसे मृत्यु के बाद भी जीवात्मा का जो अस्तित्व रहता है उस पर विश्वास होता है । कर्म का फलदाता ईश्वर ही है। इसलिए श्रद्धा-प्रदत्त पदार्थ ईश्वर की दृष्टि में जाते हैं और फिर जहाँ जीवात्मा होता है वहाँ उसे सुख पहुँचाते हैं । यदि जीवात्मा मुक्त हो गया है तब श्राद्ध का फल कर्ता को मिल जाता है । वह फल प्रदत्त पिंड या पदार्थ के रूप में नहीं लौटता बल्कि उसका जो सुख है, उसकी प्राप्ति कर्ता को होती है। श्राद्ध में प्रदत्त पदार्थ तो श्रद्धा भेजने की प्रक्रियामात्र हैं क्योंकि श्रद्धा देवता है और वह देवता बिना किसी वाहन या क्रिया के कहीं नहीं जाता । लेकिन यदि हाथ जोड़ लो, दो फूल चढ़ा दो तो वह श्रद्धेय के पास चला जाता है। शास्त्रसम्मत श्राद्धकर्म अवैज्ञानिक नहीं है, इसके पीछे बहुत बड़ा विज्ञान है ।

जब जीवात्मा इस स्थूल देह से पृथक् होता है तो उस स्थिति को मृत्यु कहते हैं । यह भौतिक शरीर २७ तत्त्वों के संघात से बना है । स्थूल पंचमहाभूत एवं स्थूल पंचकर्मेन्द्रियों को छोड़ने पर अर्थात् मृत्यु के प्राप्त हो जाने पर भी १७ तत्त्वों से बना हुआ सूक्ष्म शरीर विद्यमान रहता है । वह जीव स्वजनों में आसक्तिवश इर्दगिर्द घूमता रहता है । मोहवश वह भटके नहीं, उसकी आसक्ति मिटे और वह आगे की यात्रा करे इसलिए उसका 'तीसरा' मनाते हैं । इस दिन संबंधी इकट्ठे होकर चर्चा करते हैं कि 'फलाना भाई, अमुक साहब हमारे बीच नहीं रहे, भगवान उनकी आत्मा को शांति दे । स्थूल शरीर तो जड़ है और आत्मा कभी मरता नहीं, वह शाश्वत है, उसको कोई बंधन नहीं, वह स्वयं ही आनंदस्वरूप है ।'

सूक्ष्म शरीरधारी जीव इस लोक के सतत अभ्यास के कारण परलोक में भी इन्द्रियों के विषयों की अभिलाषा करता है परंतु उन अभिलाषाओं की पूर्ति 'भोगायतन' देह न होने के कारण नहीं कर पाता, फलस्वरूप संताप को प्राप्त होता है । श्राद्धकर्म से उन जीवों को तृप्ति मिलती है ।

श्राद्ध का वैज्ञानिक विवेचन

अन्य मासों की अपेक्षा श्राद्ध के दिनों में चन्द्रमा पृथ्वी के निकटतम रहता है। इसी कारण उसकी आकर्षण-शक्ति का प्रभाव पृथ्वी तथा प्राणियों पर विशेष रूप से पड़ता है। इस समय पितृलोक में जाने की प्रतीक्षा कर रहे सूक्ष्म शरीरयुक्त जीवों को उनके परिजनों द्वारा प्राप्त पिंड के सोम अंश से तृप्त करके पितृलोक प्राप्त करा दिया जाता है।

श्राद्ध के समय पृथ्वी पर कुश रखकर उसके ऊपर पिंडों में चावल, जौ, तिल, दूध, शहद, तुलसीपत्र आदि डाले जाते हैं । चावल व जौ में ठंडी विद्युत, तिल व दूध में गर्म विद्युत तथा तुलसीपत्र में दोनों प्रकार की विद्युत होती है । शहद की विद्युत अन्य सभी पदार्थों की विद्युत और वेदमंत्रों को मिलाकर एक साथ कर देती है। कुशाएँ पिंडों की विद्युत को पृथ्वी में नहीं जाने देतीं । शहद ने जो अलौकिक विद्युत पैदा की थी, वह श्राद्धकर्ता की मानसिक शक्ति द्वारा पितरों व परमेश्वर के पास जाती है जिससे पितरों को तृप्ति प्राप्त होती है । (शेष पृष्ठ १५ पर)

कृपण नहीं उदार बनें

(पूज्य बापूजी की ज्ञानमयी अमृतवाणी)

कृपण कौन है ?

जो कर्म करता है और नश्वर चीजें चाहता है, अपनी इच्छाएँ, वासनाएँ, मान्यताएँ नहीं छोड़ता वह कृपण है । जो फल की चाह रखता है या थोड़े-थोड़े काम में फल की इच्छा रखता है, वह कृपण है । बुद्धियोग की शरण जाओ । जो कुछ तुम चाहते हो वह नष्ट हो जायेगा, इसलिए चाह छोड़कर कर्तव्य करो ।

उदार कौन है ?

जो अपनी इच्छाएँ, वासनाएँ और पकड़ को छोड़कर अपना हृदय भगवद्ज्ञान से, भगवद्-आनंद से, भगवत्समता से, भगवद्विश्रांति से भरने को संत की 'हाँ' में 'हाँ' कर देता है तथा **'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय'** और आत्म-उल्लास के लिए सत्कर्म करता है वह उदारात्मा है ।

जो मिले वाह-वाह ! जो है वाह-वाह ! जो चला गया वाह-वाह ! जो कभी नहीं जाता उसको पाने के लिए जो चल पड़ता है वह बड़ा उदार है । ऐसे उदारों को भगवान ने खूब सराहा है ।

'रामायण' में आता है :

राम भगत जग चारि प्रकारा ।
सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥

(श्री रामचरित. बा.कां. : २१.३)

'गीता' में भी भगवान कहते हैं : मेरे चार प्रकार के भक्त हैं -

आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ।

(गीता : ७.१६)

अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु और ज्ञानी - चारों ही पुण्यात्मा, उदार हैं । इनमें ज्ञानी भक्त प्रभु को विशेष रूप से प्रिय हैं ।

आर्त भक्त दुःख मिटाने के लिए भावपूर्वक भगवान को पुकारता है, उनका चिंतन करता है इसलिए उदार है । वह डॉक्टर की, दवा की, कूड़-कपट की शरण नहीं जाता, बीमारी मिटाने के लिए गंदी चीजें नहीं खाता । ठीक-ठीक सात्त्विकता का आश्रय, भगवद्-आश्रय लेकर उपाय करता है तो वह उदार है । बीमारी का दुःख हो या निर्धनता का दुःख, संसार का कोई भी दुःख मिटाने के लिए जो भगवान की शरण जाता है, भगवान उसे उदार कहते हैं ।

अर्थार्थी, जो सम्पदा पाने के लिए भगवान की शरण में जाता है, भगवान के द्वारा अर्थ चाहता है उसको भी भगवान उदार कहते हैं । धन चाहिए तो भी कोई बात नहीं लेकिन भगवान की कृपा द्वारा धन चाहिए । तो भगवान की कृपा धीरे-धीरे भगवान से मिला देगी । है तो संसारी चीजें माँगनेवाला कि 'मुझे धन मिले, मेरा रोग मिटे, मेरा छोकरा पास हो जाय ।' लेकिन उसे कृपण नहीं कहा, क्यों ? क्योंकि दृष्टि उसकी उस परम उदार परमेश्वर पर है ।

जिज्ञासु, जो भगवान को जानने के लिए सत्संग में या भगवान की तरफ जाता है, उसको भी भगवान उदार कहते हैं । ज्ञानी के लिए बोलते हैं : 'ये तो मेरा आत्मा हैं, उदार क्या ये तो उदारशिरोमणि हैं ।'

जो पत्नी बोलती है : 'पति मुझे प्यार नहीं करता', वह कृपण है । पति क्यों प्यार करे ? तू उसकी ऐसी प्रीतिपूर्वक सेवा कर कि उसका हृदय अपने-आप संतुष्ट हो जाय । पति सोचता है, 'पत्नी प्यार नहीं करती' लेकिन आजकल के पति-पत्नी प्यार करेंगे तो वे उदार नहीं हैं, कृपण हैं; काम की नाली को विषय बनाकर प्यार करेंगे । नाक को, गाल को, शरीर को, विकार को देखकर

प्यार करेंगे तो कृपण हैं लेकिन अपने अंदर जो परमेश्वर-स्वभाव है, उसकी ओर दृष्टि रखकर एक-दूसरे का भला चाहते हैं तो उदार हैं ।

निर्दोष गुरुभाई भगवद्-आराधना के बल से एक-दूसरे को देखकर आह्लादित हो जाते हैं तो उदार हैं लेकिन एक-दूसरे को देखकर स्वार्थ से बात करते हैं तो कृपण हैं । जो जितना कृपण होता है वह उतना ही भौतिक जगत में पिसता रहता है और जितना उदार होता है उतना ही आह्लादित, आनंदित रहता है । आधिदैविक जगत में उसकी उन्नति सहज में होती है और आध्यात्मिक जगत में अच्छी गति हो जाती है ।

आदमी उदार कब बनता है ?...

जब बुद्धि निष्पक्ष हो जाती है । राग में और द्वेष में कृपणता छुपी है, कर्मबंधन, कर्तापना-भोक्तापना छुपा है, छल-कपट, बेईमानी छुपी है लेकिन राग-द्वेष रहित होने से उदारता आ जाती है ।

भगवान की शरण जानेवाला भी उदारात्मा हो जाता है । 'गीता' में शरण में आने की बात चार बार आयी है :

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् ।

(गीता : ९.१८)

जहाँ से सबके जीवन में गति आती है, जो भर्ता है, भोक्ता है उस परमेश्वर की शरण जाओ अर्थात् उसके नाते सबसे मिलो, उसके नाते सबको अपना मानो तो आप उदारात्मा हो जाओगे ।

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् ।

भगवान कहते हैं : 'शरण आओ ।' दूसरा **तमेव शरणं गच्छ** - ईश्वर की शरण में जाओगे तो उदार बन जाओगे । **मामेकं शरणं व्रज** - मुझ अंतर्यामी परमेश्वर की शरण आओ अन्यथा बुद्धि ही पुण्य-पाप से युक्त हो जाती है और सुख-दुःख से छुटकारा पाने के लायक नहीं बनती ।

तुम स्वप्नद्रष्टा हो । बीते हुए का शोक करना नासमझी है । भविष्य का भय करना, यह भी कृपणता है । वर्तमान को, बदलनेवाले संसार को, परिस्थितियों को सच्चा मानकर प्रभावित होना यह भी कृपणता है । आप उदारात्मा बन जाओ, बुद्धियोगी बन जाओ ।

जो सरक रहा है उसको पकड़-पकड़ के याद करना, सच्चा मानना कृपणता है । 'वाह ! वाह !!... वाह ! वाह !!... यह भी बीत जायेगी, गुजर जायेगी । वाह ! वाह !! आनंद...' तो सत्संग के द्वारा आपका सच्चिदानंद-स्वभाव जागृत होगा । ❑

महापुरुषों का आशीर्वाद

- पूज्य बापूजी

कुछ महात्मा होते हैं जो संकेत करते हैं, कुछ आज्ञा करते हैं । जैसे आप गये और महात्माओं ने पूछा : ''साधन-भजन चल रहा है न ?''

यह संकेत कर दिया कि अगर नहीं करते हो तो करना चालू कर दो और करते हो तो उसे बढ़ाओ । ''साधन-भजन चल रहा है, बढ़ा दो !'' कहा तो यह आज्ञा हो गयी ।

''बढ़ा दिया लेकिन मन लगता नहीं है, फिर भी ईमानदारी से किया है ।''

''मन नहीं लगता है तो कोई बात नहीं, मन न लगे फिर भी किया करो !'' - यह आज्ञा हो गयी ।

''मन नहीं लगता है ।''

''अरे ! लग जायेगा चिंता न करो ।''

यह उनका आशीर्वाद है, वरदान है । इसमें कोई डट जाय तो बस ! लेकिन फिर ऐसा नहीं कि रोज-रोज उनका सिर खपाना शुरू कर दें कि ''मन नहीं लगता, मन नहीं लगता... हताश हो जाता हूँ ।'' छोटी-छोटी बात को रोज-रोज नहीं बोलना चाहिए । वे तो सब जानते हैं; हृदय से प्रार्थना कर दी, बस छूट गया । फिर संकेत, आदेश, आज्ञा, आशीर्वाद, वरदान इस प्रकार से कई लाभ होते रहते हैं । इससे करोड़ों-करोड़ों जन्मों के संस्कार कटते रहते हैं । अपनी तीव्रता होती है तो इसी जन्म में काम बन जाता है । ❑

जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम

(पूज्य बापूजी की ज्ञानमयी अमृतवाणी)

रावण शिवजी का उपासक था किंतु ऊँचा नजरिया न होने के कारण जो कुछ पाया छूटनेवाला पाया । रावण की सभा में अंगद टिकटिकी लगा के चहुँओर से रावण को देखता है । अंगद का देखना ऐसा व्यंग्यात्मक था कि रावण आश्चर्यचकित होकर बोला : ''अंगद ! इस प्रकार क्या मेरे को देख रहे हो ? क्या विश्लेषण कर रहे हो ?''

अंगद ने कहा : ''हनुमानजी ने जो कहा था उसमें संशोधन करना पड़ेगा ।''

रावण को कौतूहल हुआ कि हनुमान ने ऐसा तो क्या कह दिया ?

अंगद ने कहा : ''हनुमानजी ने कहा था कि लंका में दस सिर और बीस आँखोंवाला अंधा व्यक्ति है ।''

रावण बोला : ''तुम संशोधन करके इसमें क्या सुधार करना चाहते हो ?''

अंगद बोला : ''शिवजी जैसे उपास्य देव मिले आपको लेकिन अब मुझे लगता है कि हनुमानजी ने आपके लिए ऐसा जल्दबाजी में कह दिया ।''

रावण का दिल खिला कि 'उसने तो बीस आँखोंवाला अंधा कहा, यह क्या कहेगा ?'

उसे कुछ तसल्ली हुई, बोला : ''हनुमान ने मेरे को गलत कहा है । तुम कहो, क्या कहते हो ?''

अंगद कहता है :

''अंधउ बधिर न अस कहहिं नयन कान तव बीस ।

(श्री रामचरित. लं.कां. : २१)

नैन भी बीस हैं और कान भी बीस हैं । तुम केवल अंधे नहीं हो, बहरे भी हो ।

जो सुनना चाहिए वह शिवजी से तुमने नहीं सुना । जो देखना चाहिए जगत को ब्रह्मरूप वह तो तुमने नहीं देखा । शिवजी जैसे समर्थ इष्ट हैं लेकिन सुनने की जिज्ञासा नहीं, गुरुतत्त्व को देखने की निगाह नहीं तो बाहर की आँख और बाहर के कान भी काम नहीं आये तुम्हारे । जिज्ञासा के कान होते और विवेक की आँख होती तो तुम ऐसी गलती नहीं करते । इतना समझाने पर भी तुम हठधर्मी नहीं हो सकते थे ।

अंधउ बधिर न अस कहहिं नयन कान तव बीस ।

तुम्हें केवल अंधा कहना ठीक नहीं, बहरे भी हो क्योंकि कान भी बीस-बीस हैं और शिवजी जैसे इष्ट मिले हैं । तुमने नजरिया नहीं रखा । इष्ट या गुरु कितने भी समर्थ हों -

मूरुख हृदयँ न चेत जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम ॥

(श्री रामचरित. लं.कां. : १६ख)

ब्रह्मा और शिवजी जैसे गुरु मिलते हैं लेकिन मूर्ख हृदय अंधा और बहरा होता है । अंधा और बहरा ठोकर खाने से तो सुधर भी सकता है लेकिन जो अपने को चतुर मानते हैं और मनमानी करने में ही लगते हैं, कपट से, चोरी से, ठगी से, धोखाधड़ी से, मनमाना करते हैं वे अंधे-बहरे से भी गये-बीते हैं । मुझे तुममें वही लक्षण दिखाई दे रहे हैं । इतने बढ़िया इष्टदेव शिवजी, फिर भी तुम्हें बाहर के आकर्षण से हटने की रुचि नहीं और सीताजी के प्रति तुम्हारे ये भाव ! 'तुम अंधे

हो' - ऐसा कहना हनुमानजी की जल्दबाजी थी। अब मुझे खोज करके यह पता चला है कि तुम बहरे भी हो । और बाहर का अंधा-बहरा तो ठोकर खाने से सुधर भी जाय लेकिन लंका जली फिर भी, राम के दूत ने इतना कर दिया फिर भी तुम्हारी आँखें नहीं खुलतीं और तुम्हारे कान तुम्हें कुछ सुनने भी नहीं देते।''

रावण की लंका में रावण को रामजी का दूत व्यंग्यात्मक वचन कहते हुए यह सुना दे, कितना बल है !

अंगद की बात पर रावण बिगड़ा । अंगद ने धरती पर पैर जमाकर ललकारा और कहा : ''इसको तुम उठाकर दिखाओ तो श्रीरामजी ने अपनी सीता हारी और मैंने अपनी सीता माता हारी ।''

रावण ने अंगद का पैर पकड़ने की कोशिश की। विफल गया । अंगद ने रावण से कहा : ''देखो, सीताजी तो तुम्हारे पास ही थीं । इसमें तो हार-जीत का सवाल ही नहीं था। फिर भी तुम मेरा पैर उठाने में विफल हो गये। वासनावानों की ऐसी ही मति-गति होती है। अभी भी श्रीराम की शरण आ जाओ लेकिन तुम मानोगे नहीं । जय श्रीराम...'' □

(पृष्ठ ११ से 'सनातन धर्म का पर्व : श्राद्ध' का शेष)

श्राद्ध मृत प्राणी के प्रति किया गया प्रेमपूर्वक स्मरण है, जो कि सनातन धर्म की एक प्रमुख विशेषता है। आश्विन मास का पितृपक्ष हमारे विशिष्ट सामाजिक उत्सवों की भाँति पितृगणों का सामूहिक महापर्व है । इस समय सभी पितर अपने पृथ्वीलोकस्थ सगे-संबंधियों के यहाँ बिना निमंत्रण के पहुँचते हैं। उनके द्वारा प्रदान किये गये 'कव्य' (पितरों के लिए देय पदार्थ) से तृप्त होकर उन्हें अपने शुभाशीर्वादों से पुष्ट एवं तृप्त करते हैं। □

भगवान भी करते हैं छेड़खानियाँ !

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)
(गतांक का शेष)

संसार प्रवाह है । जैसे गंगाजी बहती रहती हैं ऐसे ही सब आ-आ के चला जाता है । 'मैं तो ऐसा हो गया... इसने मेरे को ऐसा बोला...' जब बोला उस समय वह जैसा था अभी वैसा नहीं है। 'फलाने ने ऐसा किया...' जिस समय किया तब वह जितना बदमाश था उतना इस समय नहीं है, वह बदल गया । समय बदल गया, स्वभाव बदल गया ।

बीते हुए को याद करके शोक करना व आनेवाले का भय करना यह मूर्खों का काम है। 'जो परिस्थिति आयी वह बनी रहे, बदले नहीं' - ऐसी पकड़ बन रही है तो उसमें छेड़खानी करके श्रीकृष्ण कैसे भी तुमको सत्संग में भेज देंगे अथवा तुम्हारी प्रिय चीज में विघ्न डाल के भी कुछ-न-कुछ रास्ता खोल देंगे समझने का । यह भगवान का छेड़खानी का स्वभाव जीव के मंगल के लिए है ।

कुब्जा जा रही है । कंस के लिए अंगराग, चंदन-वंदन घिस के ले जा रही है । कंस की तरफ से श्रीकृष्ण को धनुर्यज्ञ का आमंत्रण मिला तो वे ग्वाल-गोपों के साथ जा रहे हैं । आगे-आगे कुब्जा जा रही है और पीछे यह टोला । कृष्ण बोलते हैं : ''सुंदरी !''

तो कुब्जा ने देखा कि 'यहाँ तो सब लड़के हैं, मैं तो कुरूपा हूँ। चलो, मेरा क्या !' तेजी से पदत्राण से धूल उछालती गयी, घुँघराले बालों को मटमैला करती गयी। फिर कृष्ण ने कहा : ''अरे सुंदरी !''

फिर देखती है कि 'सुंदरी, सुंदरी' करके बुला रहे हैं लेकिन यहाँ तो कोई सुंदरी है नहीं। आगे गयी। फिर कृष्ण ने कहा : ''सुंदरी ! सुना-अनसुना कर देती है ! देखकर भी अनदेखा करती है सुंदरी !''

कुब्जा की बाँछें खिल गयीं, बोली : ''बोलो सुंदर !''

जिंदगीभर कुरूपता से बदनाम उसको सुंदर कहनेवाला कृष्ण कितना सुंदर है !

''जरा-सा यह अंगराग हमको दोगी ? हम तिलक लगा लें।''

''हाँ-हाँ, लो, लो।''

श्रीकृष्ण ने गोपों को लगाया, खुद को लगाया फिर कुब्जा के पैर पर पैर रख के उसकी ठोड़ी को झटका दिया और कमर को एकदम सीधा कर दिया। जो कुबड़ी थी उसे सुंदर बना दिया। यह भगवान की छेड़खानी हुई कि नहीं ! किसी पुराण, उपनिषद्, महाभारत, शास्त्र या ग्रंथ में वर्णन नहीं मिलता कि कुब्जा ने किसी जन्म में कोई तपस्या की थी या साधना की थी अथवा भगवान को चाहा था। लेकिन छेड़खानी करके भी भला करना यह भगवान का स्वभाव है। छेड़खानी करके भी मंगल करना भगवान की आदत है क्योंकि वे प्राणिमात्र के सुहृद हैं।

आप भगवान से छेड़खानी करो, भगवान को अच्छा लगेगा। भगवान को कह दो : 'भगवान ! आप समर्थ हो, हमने मान लिया। आप सृष्टि के कण-कण में व्याप्त हो, हमने मान लिया। कृष्ण के रूप में, राम के रूप में तो अवतरित होते हो लेकिन सभी रूपों में अभी आप ही छुपे हो, हमने मान लिया। आप सर्वसमर्थ हो लेकिन दो बातों में महाराज ! आप हार जाते हो। एक तो आप कभी किसीका बुरा कर सकते हो क्या ? बोलो।' भगवान से पूछो।

रात को सोते समय उनसे छेड़खानी करो। जिसका छेड़खानी का स्वभाव है उसको छेड़खानी करनेवाला भी अच्छा लगता है। सजातीय हो गये न ! रात को भगवान से छेड़खानी करना : 'दिनभर में जो अच्छे काम किये, प्रभु ! तुमको अर्पण। गलती हो गयी तो दुबारा न करें ऐसी सद्बुद्धि दो। **आपमें और तो सब बल हैं लेकिन दो बातों में आप निर्बल हैं। एक तो आप किसीका अमंगल नहीं कर सकते।** किसीको नरक में भेज के भी उसकी शुद्धि ही करेंगे। किसीको दुःख देकर भी उसका भला ही करेंगे। आप अमंगल नहीं कर सकते। **दूसरा, अपनी सृष्टि के बाहर आप किसीको निकाल नहीं सकते।** हम तो किसीको अपने घर से निकाल दें, अपनी दुकान से निकाल दें, दफ्तर से निकाल दें, अपने गाँव, शहर या राज्य से निकलवा दें, दूसरे राज्य में भेजें लेकिन आप तो सर्वव्यापक हो तो अपने राज्य से किसीको निकाल नहीं सकते।'

संत तुकारामजी ऐसी छेड़खानी करते थे : 'मेरे प्रभु ! अब तुम कहाँ जाओगे ? गुरुजी ने हमको मंत्र दे दिया है और मंत्र तो तुम्हारी चोटी है। अब प्रकट हो के मिलो चाहे न मिलो, मंत्ररूप से तो तुम्हारी चोटी हमारे हाथ में है। जिसकी चोटी पकड़ी हो उसके पास तो पहुँचे हुए ही हैं। अब जरा खयाल करो अपनी इज्जत का ! 'वासुदेव, गोविंद' कहलाते हो, सबमें बसे हो, सबके हृदय में बसे हो। लोग तो मेरे को संत बोलते हैं पर मेरे में अभी लोभ छुपा है, काम

छुपा है, क्रोध छुपा है। कहीं गड़बड़ हुई तो इज्जत तुम्हारी जायेगी। लोग बोलेंगे, 'भगवान का भगत हो के ऐसा किया!' अपनी इज्जत का तो खयाल करो महाराज!'

ऐसे ही भगवान के छेड़खानी के स्वभाव का फायदा ले के भगवान के रस में रसमय हो जाओ।

मेरे गुरुदेव भगवान के तत्त्व का, स्वरूप का फायदा ले के भगवद्-तत्त्व में एकाकार हो गये। उसके बाद भी छेड़खानी करते थे। कभी छेड़खानी, कभी प्रेमाभक्ति... विशिष्टाद्वैत आदि।

तो जैसे भी भगवान का चिंतन हो। कंस, रावण, शिशुपाल, दंतवक्र द्वेष से चिंतन करते थे तो भी सद्गति हो गयी। गोपियाँ कांत भाव से चिंतन करती थीं तो भी सद्गति हो गयी। अर्जुन सखा भाव से चिंतन करते थे तो भी सद्गति हो गयी। हनुमानजी दास्य भाव से चिंतन करते थे तो भी सद्गति हो गयी। मीरा दास्य भाव से या और भाव से - जिस भाव से चिंतन करती, उसी भाव में नाचते-गाते कभी हँसती, कभी कृष्ण का एहसास करती, कभी विरह में रोकर शुद्ध होती तो कभी मिलन में हँसकर आनंदित होती।

आप भी ऐसा कर सकते हो : 'भगवान! हमारी अक्ल को नचानेवाले तो आप हो। हम तो चाहते हैं कि वासना का सत्यानाश हो और तुम्हारी जय हो। तुम नचाओ वैसे हम नाचेंगे। वासना नचाकर हमको कई गर्भों में ले जायेगी, तुम्हीं नचाया करो महाराज!' अपने मन की चाही हो तो इतना खुश मत होना। अपने मन के विपरीत हो जाय तो कहना : 'वाह महाराज! आसक्ति मिटाने के लिए आपने बहुत बढ़िया किया।' इससे आपकी दुःखद अवस्था भी सुखद हो जायेगी। हम लोग गलती क्या करते हैं कि अपने मन का होता है तो बड़े खुश होते हैं। अपने मन का नहीं होता तो सोचते हैं, 'क्या करें भगवान नाराज हैं, हमारा भाग्य खराब है', अथवा तो बोल देते हैं : 'भगवान परीक्षा ले रहे हैं।' जो मूर्ख है, नहीं जानता, वह परीक्षा लेगा। अंतर्यामी सब कुछ जानते हैं, वे क्या परीक्षा लेंगे! लेकिन सांत्वना देने के लिए समझाया जाता है : 'चलो भाई! भगवान परीक्षा ले रहे हैं। धीरज रखो, बीत जायेगा।' आपके मन में १० मिनट या २ मिनट के बाद क्या आयेगा आपको पता नहीं लेकिन भगवान को पता है। मैं नर्मदा-किनारे सब कुछ छोड़कर बैठ गया था। सुबह नहा के आया, भूख लगी।

सोचा मैं न कहीं जाऊँगा,
यहीं बैठकर अब खाऊँगा।
जिसको गरज होगी आयेगा,
सृष्टिकर्ता खुद लायेगा॥

कुछ जप-ध्यान होता है न, तो भगवान के प्रति अपनी प्रीति और अपनी हुज्जत बढ़ जाती है। मैं तो बैठ गया। थोड़ी देर में दो किसान फल व दूध लेकर आये और मेरे को बोले : ''लो।'' मैंने कहा : ''आपका-हमारा परिचय नहीं है, तुम्हारा कोई दूसरा संत होगा।''

बोले : ''नहीं, रात को स्वप्न में यह मार्ग दिखा था और ऐसी ही आपकी आकृति दिखी थी।''

अब मेरे को तो सुबह विचार आया लेकिन मेरे को विचार आये उसके पहले ही किसानों को स्वप्न दे दिया, रास्ता दिखा दिया। कैसा छेड़खानीवाला है! मैं छेड़खानी करूँ उसके पहले ही उसने छेड़खानी का उत्तर दे दिया। तो छेड़खानी करके भी मंगल करना और मंगल संदेश देना यह भगवान की आदत है। प्राणिमात्र के सुहृद हैं भगवान!

तर्क का विषय नहीं भगवान

(भगवान की मधुमय लीला)

(पूज्य बापूजी की मधुमय अमृतवाणी)

अंतर्यामी भगवान तो सर्वत्र हैं, निर्गुण-निराकार हैं, सत्ता-स्फूर्ति देते हैं लेकिन ऐसा भगवान भी चाहिए जो आप न चाहो फिर भी आपको कोहनी मार के जगा दे, ठेंगा दिखाकर हिला दे, कुछ-न-कुछ करके आपके अंदर छुपा अपना रसीला स्वभाव जगा दे।

आपको भगवान की यह लीला सुनकर उन पर हँसी आयेगी। तुम्हें खूब पेट भर के हँसना होगा, पेट भर के प्यारे को प्यार करना होगा - 'मेरे दाता ! कन्हैया ! ओ प्यारे !!...'

मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) में उड़िया बाबा सत्संग कर रहे थे। किसी ब्राह्मण के यहाँ ठहरे थे। उधर आने-जानेवाले एक ठाकुर पर उनकी नजर पड़ी। वह बाबा के पास आया, वार्तालाप हुआ। वह कट्टर आर्यसमाजी था और माला घुमाता था। दोनों बातें विरुद्ध थीं।

बाबा ने पूछ लिया : ''भाई ! तू तो आर्यसमाजी है और माला पर 'वासुदेव' का जप कर रहा है ? आर्यसमाजी लोग तो कृष्ण के नाम पर उनके भक्तों को खरी-खोटी सुनाते हैं और तू **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** करता है ?''

वह बोला : ''मैं भी खूब गालियाँ देता था।''

''फिर अब कृष्ण की माला क्यों घुमाते हो ?''

वह पहलवान ठाकुर उड़िया बाबा को बोलता है :

बाबा ! मैं आपको आपबीती बताऊँगा न, तो आप भी मेरे पर हँसोगे। पहले ८-१० वर्ष की उम्र में तो मेरे को ऋषि दयानंद के दर्शन हुए थे। उनका ब्रह्मचर्य और सत्यनिष्ठा देखकर मैं तो बन गया आर्यसमाजी ! सुनें-सुनायें कि श्रीकृष्ण ऐसे हैं-वैसे हैं... ब्रह्मचारी के लिए श्रीकृष्ण की लीलाएँ भौंहें चढ़ाने जैसी होती हैं। तो मैं भी भौंहें चढ़ाता रहा, नाक-भौं सिकोड़ता रहा तथा कृष्ण को और कृष्णभक्तों को खरी-खोटी सुनाता रहा। अब भी आर्यसमाजी तो हूँ लेकिन मेरे साथ जो बीती है भगवान करे सबके साथ बीते।

मैं २३ साल का था तब काशी गया। वहाँ एक ठाकुर साहब थे। मैं तो जाति का ठाकुर हूँ लेकिन वे रियासतों के ठाकुर साहब थे। उनको किसी पहलवान की जरूरत थी। उन्होंने मेरे को अपने पास रख लिया। मुझे काम-धंधा मिल गया। उनके यहाँ श्रीकृष्ण का मंदिर बना हुआ था और पुजारी भी बड़े प्रेम से श्रीकृष्ण की पूजा करते थे। मैं तो ठाकुर साहब के यहाँ काम करता, दिन में तीन बार संध्या करता, यज्ञ-वज्ञ करता और बाद में समय मिले तो बस, कृष्ण और उनके भक्तों को कोसता। रात को आर्यसमाज में जाता और कृष्ण के लिए खरी-खोटी वाला भाषण करता।

ठाकुर साहब और उनके मंदिर के पुजारी कृष्णभक्त थे। इस कारण मैं पुजारीजी को भी सुना दिया करता था : ''तुम मूर्ति को मानते हो, पत्थर को मानते हो। यह अंधश्रद्धा है। ईश्वर निराकार है। ये है-वो है...'' जो कुछ भी आता, मैं पुजारीजी को भी कोसता, श्रीकृष्ण को भी कोसता लेकिन ठाकुर साहब और पुजारीजी मुझे बड़ा स्नेह करते थे। फिर भी मेरे मन में कृष्णभक्तों के लिए और कृष्ण के लिए नाराजगी के, नफरत के जो संस्कार डाल दिये गये थे, वे उछल-उछल के मुझसे कुछ-की-कुछ बड़बड़ाहट कराते थे। एक शाम को मैंने पुजारीजी को इतना कोसा कि गालियाँ तक दे डालीं। मैंने भगवान के विरुद्ध ऐसी-ऐसी कड़वी बातें कहीं कि पुजारीजी की आँखों से अश्रुधाराएँ बहने लगीं। वे बहुत व्यथित होकर वहाँ से चले गये।

रात को रोज की तरह मैं जमीन पर सोया था, पुजारीजी तख्त पर सोये थे। अचानक मेरी आँख खुली और मुझे तख्त के उस तरफ सूर्य का-सा

प्रकाश दिखा । देखा कि तख्त के पास एक छोरा खड़ा है और उसके शरीर से दिव्य प्रकाश निकल रहा है । मैंने कहा : ''तू इधर कहाँ से आया है ? मेरा लोटा-अँगोछा कहाँ है ? जल्दी ले आ !''

वह बालक १०-१२ साल का था और मेरा मजाक उड़ाते हुए हँस रहा था । उसने मुझे ठेंगा दिखाया, 'ले...' इतने से वह रुका नहीं, फिर जिह्वा भी निकाली, 'ओ...'

मैं बोला : ''ऐ ! तू पहलवान ठाकुर के सामने ऐसा करता है ? तू क्या समझता है अपने को ! हाथ पकड़कर तेरा ठेंगा मसल दूँगा, दिन के तारे दिखा दूँगा ।''

उसने फिर से ठेंगा दिखाया, 'ले...'

मेरे गुस्से का तब कोई नियंत्रक था नहीं । मैं तो स्वभाव से ही गुस्सेबाज था, पहलवान भी था । मैंने कहा : ''या तो तू रहेगा या तो मैं रहूँगा । इतनी सुबह-सुबह को न अन्न, न जल और तू ठेंगा दिखाता है ! मेरी बात मानता नहीं है, ऊपर से ठेंगा दिखाता है !''

उसने फिर से ठेंगा दिखाया । मैं उसको पकड़ने ज्यों तख्त के नजदीक गया, त्यों वह तख्त की उस तरफ... वह आगे, मैं पीछे... तख्त को चक्कर लगाते रहे । वह मेरे हाथ में ही नहीं आवे और मैं कुछ-का-कुछ बोलूँ । तो पुजारीजी और आसपास के लोग जग गये और पूछने लगे : ''अरे पहलवान ! तुमको क्या हुआ है ? अरे ठाकुर ! तुमको क्या हुआ है ?''

''मुझे क्या हुआ ? यह कितनी बदमाशी कर रहा है ! आज का छोरा हमारे जैसे पहलवानों के मुँह लगे !''

''कौन-सा छोरा ?''

''आपको दिखता नहीं ! देखो, पकड़ने जाता हूँ तो भागता है, फिर कोशिश करता हूँ तो भागता है... इसको पकड़ो ! पकड़ो इसको !!''

''ठाकुर ! तुमको क्या हो गया है ?''

''अरे, क्या हो गया उससे पूछो न ! मेरे को ठेंगा दिखाता है । अभी वह ठेंगा पकड़ के ऐसा मसलूँगा, ऊपर फेंकूँगा ।''

मैं उसके पीछे-पीछे दौड़ूँ और चिल्लाऊँ : ''वह देखो दौड़ता है ।'' मैं तख्त के चारों तरफ घूमूँ और वह मुझे ठेंगा दिखाता जाय, किसीको दिखे नहीं । 'ले...' करके कभी जीभ दिखाये, कभी ठेंगा दिखाये । मैं रुकूँ तो वह रुक जाय, मैं भागूँ तो वह भागे । मैं थक गया । आखिर देखा कि वह बालक जा के पुजारीजी की गोद में बैठ गया और अंतर्धान हो गया । उस प्रकाश से सुबह समझकर मैं लोटा-अँगोछा माँग रहा था लेकिन घड़ी देखी तो रात्रि का एक बजा था । ज्यों वह बालक अंतर्धान हुआ त्यों सवेरा रात्रि में बदल गया ।

लोगों ने बोला : ''तू श्रीकृष्ण को कोसता है न ! उन्होंने कृपा करके तुमको यह लीला दिखायी है ।''

''मैं नहीं मानता हूँ ऐसे तुम्हारे गाय चरानेवाले को । लीला है, ये है-वो है... तुम भगतड़ों की बातों में मैं आनेवाला नहीं हूँ । ऐसी बातों से मैं कृष्ण को भगवान नहीं मान सकता । हाँ, अब मैं पुजारीजी को गाली नहीं दूँगा, कृष्ण को भी गाली नहीं दूँगा ।''

कुछ दिन बीते-न बीते तो ठाकुर साहब का छोरा, जो ३-४ महीने से ननिहाल गया था, मैंने देखा कि वह मंदिर में खड़ा है । वह भी १२-१३ साल का ही था ।

मैंने पूछा : ''अरे, तू तो ननिहाल में गया था, कब आया ? इधर क्यों खड़ा है ?''

बालक : ''मैं तो कल ही आ गया था ।''

''अरे ! मैं दिनभर तुम्हारे घर में रहता हूँ, कल ही आये तो मेरी आँखों को तुमने क्या पट्टी बाँध दी थी ? आज यहाँ मंदिर में दिखे हो, किसको उल्लू बना रहे हो बेटे !''

वह बोला : ''बेटे-वेटे क्या ! मैं तो सबका बाप-का-बाप हूँ ।''

''अरे, तू ठाकुर साहब का बेटा है । वे और

मैं बराबरी के हैं तो तू मेरे बेटे बराबर है।''

''धत् तेरे की... तू काहे का मेरा बाप ! मैं बापों-का-बाप हूँ।''

''अरे छोरा ! तू क्या बोलता है ! तू चल, मैं तेरी ठाकुर साहब से पिटाई कराता हूँ।''

''अरे ! तेरा ठाकुर साहब और तू... क्या पिटाई-पिटाई ? ले...'' ठेंगा दिखाया उसने।

मैं ज्यों उसे पकड़ने गया त्यों छोरा मंदिर में से दौड़ा और ठाकुर साहब के घर में घुस गया।

''अरे ठाकुर साहब ! देखो, आपका लड़का ननिहाल से आया और मेरा मजाक उड़ाता है। कहाँ गया ?...''

घर के लोग बोले : ''तुमको क्या हो गया है पहलवान ! वह तो ३-४ महीने से ननिहाल गया हुआ है, वह यहाँ कहाँ ?''

''अभी घर में घुस गया है।''

''जाओ, तुम्हीं खोज लो।''

मैंने घर का कोना-कोना छान मारा परंतु छोरा तो दिखे नहीं।

घर के लोगों ने कहा : ''तुमको श्रीकृष्ण अपनी माया दिखा रहे हैं। तुम जिनको गालियाँ देते थे, वे गाली देनेवाले का भी भला चाहते हैं। शिशुपाल ने १००-१०० गालियाँ दीं तो भी उसको सद्‌गति दे दी। कंस भी कुछ-का-कुछ बोलता था तो भी उसकी सद्‌गति की। पूतना ने जहर पिलाया तो भी उसकी सद्‌गति की। धेनुकासुर, बकासुर, शकटासुर, अघासुर जो मारने आये थे उनको मोक्ष दे दिया तो तुमको कैसे छोड़ेंगे ? भगवान को रीझ भजो या खीझ, वे तो प्रेमस्वरूप हैं। वे ठाकुरजी तुम्हें प्रेम की अठखेलियाँ करके सुधारना चाहते हैं।''

''अरे, छोड़ो ये सब भक्तों की बातें ! मैं ऐसे माननेवाला नहीं हूँ।''

लोग बोले : ''ठाकुर ! अभी तक तुमको भगवान की लीला समझ में नहीं आयी ?''

वह पहलवान उड़िया बाबा को बोलता है : बाबाजी ! मैं इतने कट्टर संस्कारवाला था कि ऐसे चमत्कार देखने के बाद भी मैंने खरी-खोटी सुना दी : ''अरे, तुम्हारा भगवान-वगवान क्या है ये ? गायें चराये, गोपियों के आगे नाचे... कृष्ण के भक्त और कृष्ण - सब बेवकूफी की बातें हैं। तीसरी बार अच्छी तरह से दिखे तब कहीं मैं मानने की सोचूँगा।''

इस बात को २१ दिन बीत गये। २२वें दिन मंदिर में फिर से वही छोरा दिखा। मैंने कहा : ''अरे, उस दिन घर में भाग गया था फिर कहाँ चला गया था ? और तूने तो बोला था कि 'मैं कल ही आया था।' फिर पता चला कि तुम आये ही नहीं थे, ननिहाल में थे।''

छोरा बोला : ''पहलवान ! तुझे पता नहीं है, खेल-खेल में हम ऐसा सब कुछ करते हैं।''

''तो पहली बार तुम्हीं आये और दूसरी बार भी तुम्हीं आये थे।''

''हाँ, खेल-खेल में हम सब करते हैं। खेल-खेल में यह मजाक चलता रहता है।''

''अच्छा, तो तुमने मेरे को मजाक का विषय बना रखा है !''

''और क्या ! जब तक तू नहीं मानेगा तब तक तेरे से मजाक कर-करके मनवाऊँगा बेटे ! तू क्या समझता है ! ठाकुर है, पहलवान है तो तेरे अहं का है। मेरी दुनिया में तो तेरे जैसे कई नचाता रहता हूँ।''

''तू इतना छोटा छोरा और कुछ-का-कुछ बोलता है ! तुझे कोई बोलनेवाला नहीं है ?''

''अरे, सबको बोलने की सत्ता मैं देता हूँ, मेरे को बोलनेवाला कौन होगा ! सबकी बुद्धि का अधिष्ठान मैं हूँ।''

''बड़े बुद्धि के अधिष्ठान हो ! गायें तो चराते थे ! लोग भले 'कृष्ण-कन्हैया लाल की जय' बोलते हैं लेकिन मैं तुमको ऐसा कोई माननेवाला

नहीं हूँ । तुम मेरे पीछे क्यों पड़े हो ?''

''अरे ! जो मेरे पीछे पड़ता है मैं उसके पीछे पड़ता हूँ। तुम विरोध से पीछे पड़ते हो, कोई भावना से पीछे पड़ता है । जो भावना से पीछे पड़ता है उसको मैं रस देता हूँ और तुम्हारे जैसे को नचा-नचाकर, जरा चरपरा दे के भी पीछे पड़ता हूँ ।''

''क्या मतलब ?''

''सारे मतलब काल्पनिक होते हैं ।''

''तुम मेरे से आखिर क्या मनवाना चाहते हो ?''

''हम मनवाना क्या चाहते हैं ! तुम लोग जिसको गाली देते हो, ऐसा है-वैसा है... कहते हो, उसको तुम जानते हो ? तुम अपने को ही नहीं जानते हो । सुन-सुन के अपने को मान लिया ठाकुर । जरा-सी मांसपेशियाँ बढ़ाकर मान लिया पहलवान । 'मैं बच्चा हूँ, मैं जवान हूँ, मैं दुःखी हूँ, मैं सुखी हूँ...' - इन सब कल्पनाओं में तो जिंदगी तबाह हो गयी । तुम कौन हो ? अपने को तो जानते नहीं, मेरे को क्या खाक जानोगे ?''

मैं उनके सामने देखता रहा और उन्होंने मेरी आँखों में झाँका ।

उड़िया बाबा को गद्गद कंठ से वह ठाकुर बता रहा है कि जब तीसरी बार उस बालक ने मेरी आँखों में झाँका तब से वह मेरे से दूर नहीं होता है । बालक तो अंतर्धान हो गया लेकिन मैं पुजारीजी के चरणों में गिर पड़ा । पुजारीजी ने मेरे को गले लगाया और मंत्र दिया : **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।** तब से मैं आर्यसमाजी होने पर भी श्रीकृष्ण का भक्त हूँ । तीन-तीन बार श्रीकृष्ण आये और मुझ जैसे कट्टर विरोधी, गाली देनेवाले को भी दंड के बदले तोहफा देकर गये ।

भावग्राही जनार्दनः । भगवान तर्क का विषय नहीं हैं । सारे तर्क जिनसे प्रकाशित होते हैं वे अंतर्यामी भगवान हैं और सर्वव्यापक भी हैं । अंतःकरण में हैं तो अंतर्यामी कहलाते हैं और तत्त्व रूप से वे ही सर्वव्यापक हैं, निराकार भगवान हैं । **रसो वै सः ।** परमात्मा रसस्वरूप हैं । जीवन में अगर प्रेमरस नहीं है तो आदमी नीरस होता है । श्रीकृष्ण रस बाँटने के लिए अवतरित हुए हैं । वे रस-अवतार, प्रेमावतार हैं; न चाहो तो भी आपको प्रेम-प्रसाद से छका देते हैं ।

***

मेरे सद्गुरु साँवरे

साँवरे सद्गुरु आते हैं, वो बाँकी अदा दिखाते हैं,
हमारा चित्त चुराते हैं...

शकटासुर और बकासुर, शिशुपालों कंसों से भी ।
पंजे से पूतना माया के, हमें छुड़ायें वे ही ॥
कालिया नाग कलियुग से आप ही हमें बचाते हैं ।
साँवरे सद्गुरु...

है अहं की मटकी फोड़ी, दधि विषयों का बिखराया ।
मन माखन चुरा लिया, ज्ञान गोरस से हमें छकाया ॥
मनमोहन लीला आप नित नयी हमें दिखाते हैं ।
साँवरे सद्गुरु...

जब कभी विकारों की कौरव सेना में घिर घबराया ।
अपनों बेगानों के प्रति राग-द्वेष ने जब भरमाया ॥
जीवन की महाभारत में सत्संग गीता गाते हैं ।
साँवरे सद्गुरु...

दुष्वृत्ति के दुःशासन ने जब चीरहरण करने को ।
मुझ पर है घेरा डाला मुझको बेबस करने को ॥
संयम का चीर बढ़ाते मेरी लाज बचाते हैं ।
साँवरे सद्गुरु...

करते हो वहन तुम मेरा, सब योगक्षेम हे गुरुवर !
संसार भार गोवर्धन पर्वत, तुम हो मेरे गिरिधर ॥
आपत्ति-वृष्टि से नाथ आप ही मुझे बचाते हैं ।
साँवरे सद्गुरु...

प्राणों के इस मधुबन में, मेरी वृत्ति बनी है राधा ।
वाणी की वेणु बजा तुमने, गोपी समूह को साधा ॥
मन वृंदावन में माधव आप ही रास रचाते हैं ।
साँवरे सद्गुरु...

– **'चाँद' लखनवी, लखनऊ**
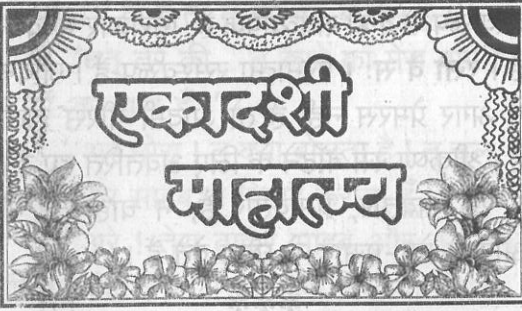
जो अकाल को बदले सुकाल में

(पद्मा/परिवर्तिनी एकादशी : २६ सितम्बर)

युधिष्ठिर ने पूछा : ''केशव ! भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है और उसकी विधि क्या है ?''

भगवान श्रीकृष्ण बोले : ''राजन् ! इस विषय में मैं तुम्हें एक आश्चर्यजनक कथा सुनाता हूँ, जिसे ब्रह्माजी ने महात्मा नारद से कहा था ।

नारदजी के पूछने पर ब्रह्माजी ने कहा : ''मुनिश्रेष्ठ ! भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की एकादशी 'पद्मा' के नाम से विख्यात है । यह उत्तम व्रत अवश्य करने योग्य है । सूर्यवंश में मांधाता नामक एक चक्रवर्ती, सत्यप्रतिज्ञ और प्रतापी राजर्षि हो गये । वे प्रजा का अपने औरस पुत्रों की भाँति धर्मपूर्वक पालन किया करते थे । उनके राज्य में अकाल नहीं पड़ता था, मानसिक चिंताएँ नहीं सताती थीं और व्याधियों का प्रकोप भी नहीं होता था । उनकी प्रजा निर्भय तथा धन-धान्य से समृद्ध थी । महाराज के कोष में केवल न्यायोपार्जित धन का ही संग्रह था । राज्य में समस्त वर्णों और आश्रमों के लोग अपने-अपने धर्म में लगे रहते थे । राज्य की भूमि कामधेनु के समान फल देनेवाली थी । प्रजा बहुत सुखी थी ।

एक समय राज्य में तीन वर्षों तक वर्षा नहीं हुई । इससे प्रजा भूख से पीड़ित हो नष्ट होने लगी । तब सम्पूर्ण प्रजा ने महाराज के पास आकर इस प्रकार कहा : ''नृपश्रेष्ठ ! अन्न के बिना प्रजा का नाश हो रहा है, अतः ऐसा कोई उपाय कीजिये जिससे हमारे योगक्षेम का निर्वाह हो ।''

राजा ने कहा : ''आप लोगों का कथन सत्य है क्योंकि अन्न को ब्रह्म कहा गया है । अन्न से प्राणी उत्पन्न होते हैं और अन्न से ही जगत जीवन धारण करता है । मैं प्रजा का हित करने के लिए पूर्ण प्रयत्न करूँगा ।''

राजा मांधाता इने-गिने व्यक्तियों को साथ ले सघन वन की ओर चल दिये । वहाँ जाकर मुख्य-मुख्य मुनियों और तपस्वियों के आश्रमों में गये । एक दिन उन्हें ब्रह्मपुत्र अंगिरा ऋषि के दर्शन हुए । उन पर दृष्टि पड़ते ही राजा हर्ष में भरकर अपने वाहन से नीचे उतरे और दोनों हाथ जोड़कर ऋषि के श्रीचरणों में प्रणाम किया । ऋषि ने भी 'स्वस्ति' कहकर राजा का अभिनंदन किया और राज्य की कुशलता पूछी । राजा ने अपनी कुशलता बताकर ऋषि का कुशलक्षेम पूछा । तत्पश्चात् ऋषि ने राजा से आगमन का कारण पूछा ।

राजा ने कहा : ''भगवन् ! मैं धर्मानुकूल प्रणाली से प्रजा का पालन कर रहा था । फिर भी मेरे किसी कर्म के फलस्वरूप मेरे राज्य में वर्षा का अभाव हो गया है । आप मुझे वह उपाय कहिये जिससे राज्य में फिर से वर्षा हो ।''

ऋषि बोले : ''राजन् ! भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में जो 'पद्मा' नाम से विख्यात एकादशी होती है, उसके व्रत के प्रभाव से निश्चय ही उत्तम वृष्टि होगी । नरेश ! तुम अपनी प्रजा और परिजनों के साथ इसका व्रत करो ।''

राज्य में लौटकर राजा ने समस्त प्रजा के साथ पद्मा एकादशी का व्रत किया । व्रत के प्रभाव से मेघ पानी बरसाने लगे । पृथ्वी जल से आप्लावित हो गयी व हरी-भरी खेती से सुशोभित होने लगी । सब लोग सुखी हो गये ।''

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : ''राजन् ! इस कारण इस उत्तम व्रत का अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए । इस एकादशी के माहात्म्य को पढ़ने और सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है ।''

('पद्म पुराण' से) □

मिथ्या कलंक से बचें

(गणेश चतुर्थी : १९ सितम्बर)

भाद्रपद मास की शुक्ल चतुर्थी को चन्द्रदर्शन निषिद्ध माना गया है । इसी दिन चन्द्रदर्शन के कारण भगवान श्रीकृष्ण पर 'स्यमंतक मणि' की चोरी का मिथ्या कलंक लगा था ।

पौराणिक कथा के अनुसार कहते हैं कि एक दिन चन्द्रमा को अपने सौंदर्य का अभिमान हो गया और उसने गजवदन गणेशजी का उपहास कर दिया । अपने तिरस्कार को ताड़कर गणेशजी ने शाप दिया कि ''आज से तुम काले-कलूटे हो जाओ तथा जो भी आज के दिन तुम्हारा मुख देखेगा वह भी कलंक का पात्र होगा ।'' उस दिन भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी थी ।

चन्द्रमा ने तत्काल गिड़गिड़ाकर क्षमा-याचना की । तब संतुष्ट होकर गणपतिजी ने कहा : ''आगे से तुम सूर्य से प्रकाश पाकर महीने में एक दिन पूर्णता को प्राप्त करोगे । मेरा यह शाप केवल भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को विशेष रहेगा, बाकी चतुर्थियों पर इतना प्रभावी नहीं होगा । इस दिन जो मेरा पूजन करेगा, उसका मिथ्या कलंक मिट जायेगा ।''

चतुर्थी तिथि के स्वामी गणपति हैं । उपरोक्त प्रसंग से लेकर आज तक लोगों ने इस शाप के प्रभाव का अनुभव किया तथा निरंतर अनुसंधानगत प्रमाणों के कारण जनमानस ने इस चतुर्थी को चन्द्रदर्शन निषिद्ध माना ।

इस निषेध का वैज्ञानिक पक्ष यह है कि सूर्य-चन्द्र गणना के अनुसार उक्त पिंड इस दिन ऐसी त्रिभुज कक्षा में स्थित रहता है, जिससे इसकी प्राणशक्ति में वैषम्य आ जाता है । चन्द्र सूर्य से प्रकाश पाता है यह एक वैज्ञानिक तथ्य है । चन्द्रमा की चौथी कला का विकास खासकर सिंह के सूर्य (भाद्रपद मास) में सूर्य की मृत्युकिरणवाले भाग से प्रकाशित होता है । उस दिन चन्द्र-सम्भूत रश्मियाँ, विकृत विचार-तरंगों में तरंगित होकर मन को विलक्षण ढंग से प्रभावित करती हैं । इसलिए इस दिन चन्द्रदर्शन का फल अशुभ होता है ।

इस वर्ष गणेश चतुर्थी (१९ सितम्बर) के दिन चन्द्रास्त : रात्रि ९.१० बजे है । इस समय तक चन्द्रदर्शन निषिद्ध है ।

अनिच्छा से चन्द्रदर्शन हो जाय तो...

यदि भूल से भी चौथ का चन्द्रमा दिख जाय तो 'श्रीमद् भागवत' के १०वें स्कंध के ५६-५७वें अध्याय में दी गयी 'स्यमंतक मणि की चोरी' की कथा का आदरपूर्वक पठन-श्रवण करना चाहिए । भाद्रपद शुक्ल तृतीया या पंचमी के चन्द्रमा का दर्शन करना चाहिए, इससे चौथ को दर्शन हो गये हों तो उसका ज्यादा दुष्प्रभाव नहीं होगा ।

निम्न मंत्र से पवित्र किया हुआ जल पीना चाहिए । मंत्र इस प्रकार है :

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः ।
सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः ॥

'सुंदर, सलोने कुमार ! इस मणि के लिए सिंह ने प्रसेन को मारा है और जाम्बवान ने उस सिंह का संहार किया है, अतः तुम रोओ मत । अब इस स्यमंतक मणि पर तुम्हारा ही अधिकार है ।'

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, अध्याय : ७८)

चौथ के चन्द्रदर्शन से कलंक लगता है । इस मंत्र-प्रयोग अथवा उपरोक्त कथा के वाचन या श्रवण से उसका प्रभाव कम हो जाता है । ❐

ब्रह्मचर्य की साधना क्यों ?

अमेरिका में किया गया प्रयोग

अमेरिका में एक विज्ञानशाला में ३० विद्यार्थियों को भूखा रखा गया । इससे उतने समय के लिए तो उनका कामविकार दबा रहा परंतु भोजन करने के बाद फिर से उनमें कामवासना जोर पकड़ने लगी । कुछ ऐसे भी लोग हुए हैं जिन्होंने इस कामविकार से छुटकारा पाने के लिए अपनी जननेन्द्रिय ही काट दी और बाद में बहुत पछताये। उन्हें मालूम नहीं था कि जननेन्द्रिय तो कामविकार प्रकट होने का एक साधन है । फूल-पत्ते तोड़ने से पेड़ नष्ट नहीं होता । मार्गदर्शन के अभाव में लोग कैसी-कैसी भूलें करते हैं, इसका यह एक उदाहरण है ।

कामशक्ति का दमन या ऊर्ध्वगमन ?

कामशक्ति का दमन कामविकार से बचने का सही हल नहीं है । सही हल है इस शक्ति को ऊर्ध्वमुखी बनाकर शरीर में ही इसका उपयोग करके परम सुख को प्राप्त करना । यह युक्ति जिसको आ गयी, उसे सब आ गया और जिसे यह नहीं आयी वह समाज में कितना भी सत्तावान, धनवान, प्रतिष्ठावान बन जाय, अंत में मरने पर अनाथ ही रह जायेगा, अपने-आपको नहीं मिल पायेगा ।

गौतम बुद्ध यह युक्ति जानते थे, तभी अंगुलिमाल जैसा निर्दयी हत्यारा भी सारे दुष्कृत्य छोड़ उनके आगे भिक्षुक बन गया । ऐसे महापुरुषों में वह शक्ति होती है जिसके प्रयोग से साधक के लिए ब्रह्मचर्य की साधना एकदम सरल हो जाती है । फिर कामविकार से लड़ना नहीं पड़ता बल्कि जीवन में ब्रह्मचर्य सहज ही फलित होने लगता है ।

मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो थोड़ा-सा जप-तप करते हैं और बहुत पूजे जाते हैं । ऐसे भी लोगों को देखा है जो बहुत जप-तप करते हैं फिर भी समाज पर उनका कोई प्रभाव नहीं, उनमें आकर्षण नहीं । जाने-अनजाने, हो-न हो जागृत अथवा निद्रावस्था में या अन्य किसी प्रकार से उनकी वीर्यशक्ति अवश्य नष्ट होती रहती है ।

एक साधक का अनुभव

एक साधक ने, यहाँ उसका नाम नहीं लूँगा, मुझे स्वयं ही बताया : ''स्वामीजी ! यहाँ आने से पूर्व मैं महीने में एक दिन भी पत्नी के बिना नहीं रह सकता था... इतना अधिक कामविकार में फँसा हुआ था परंतु अब ६-६ महीने बीत जाते हैं पत्नी के बिना और कामविकार भी पहले की भाँति नहीं सताता ।''

दूसरे साधक का अनुभव

दूसरे एक सज्जन यहाँ आते हैं, उनकी पत्नी स्वयं तो यहाँ आती नहीं, मगर लोगों से कहती है कि ''किसी प्रकार मेरे पति को समझायें कि वे आश्रम में न जाया करें ।''

वैसे तो आश्रम में जाने के लिए कोई क्यों मना करेगा ? लेकिन वह लोगों से कहती है : ''इन बाबा ने मेरे पति पर न जाने क्या जादू किया है कि पहले तो वे रात को मुझे पास में सुलाते थे परंतु अब मुझसे दूर सोते हैं । इससे तो वे सिनेमा में जाते थे, जैसे-तैसे दोस्तों के साथ घूमते रहते थे, वही ठीक था । उस समय कम-से-कम मेरे कहने में तो चलते थे ! परंतु अब तो...''

कैसा दुर्भाग्य है मनुष्य का ! व्यक्ति भले ही पतन के रास्ते चले, उसके जीवन का भले ही

सत्यानाश होता रहे परंतु 'वह मेरे कहने में चले...' यही संसारी प्रेम का ढाँचा है । इसमें प्रेम एक प्रतिशत हो सकता है, बाकी ९९ प्रतिशत तो मोह ही होता है, वासना ही होती है । मगर मोह भी प्रेम का चोला ओढ़कर फिरता रहता है और हमें पता नहीं चलता कि हम पतन की ओर जा रहे हैं या उत्थान की ओर ।

क्या यह चमत्कार है ?

ब्रह्मचर्य उत्थान का मार्ग है । बाबाजी ने कुछ जादू-वादू नहीं किया । केवल उनके द्वारा उनकी यौगिक शक्ति का सहारा उस व्यक्ति को मिला, जिससे उसकी कामशक्ति ऊर्ध्वगामी हो गयी । इस कारण उसका मन संसारी कामसुख से ऊपर उठ गया । जब असली रस मिलने लग गया तो निस्तेज करनेवाली गंदी नाली द्वारा मिलनेवाले रस की ओर कोई क्यों ताकेगा ? ऐसा कौन मूर्ख होगा जो ब्रह्मचर्य का पवित्र और असली रस छोड़कर घृणित व पतनोन्मुख करनेवाले संसारी कामविकार की ओर दौड़ेगा !

लोगों के लिए तो यह मानो एक बहुत बड़ा चमत्कार है परंतु इसमें चमत्कार जैसी कोई बात नहीं है । जो महापुरुष योगमार्ग से परिचित हैं और अपनी आत्ममस्ती में मस्त रहते हैं, उनके लिए तो यह एक खेलमात्र है ।

योग का भी अपना एक विज्ञान है, जो स्थूल विज्ञान से भी सूक्ष्म एवं अधिक प्रभावी होता है । जो लोग ऐसे किसी योगी महापुरुष के सान्निध्य का लाभ लेते हैं, उनके लिए तो ब्रह्मचर्य का पालन सहज हो जाता है । उन्हें अलग से कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती ।

हस्तमैथुन व स्वप्नदोष से कैसे बचें ?

यदि कोई हस्तमैथुन या स्वप्नदोष की समस्या से ग्रस्त है और वह इस रोग से छुटकारा पाने को वस्तुतः इच्छुक है तो सबसे पहले मैं यही कहूँगा कि अब वह यह चिंता छोड़ दे कि 'मुझे यह रोग है और अब मेरा क्या होगा ? क्या मैं फिर से स्वास्थ्य-लाभ कर सकूँगा ?' इस प्रकार के निराशावादी विचारों को वह जड़मूल से उखाड़ फेंके ।

सदैव प्रसन्न रहो

जो हो चुका वह बीत गया । **बीती सो बीती... बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय ।** एक तो रोग, फिर उसका चिंतन और भी रुग्ण बना देता है । इसलिए पहला काम तो यह करो कि दीनता के विचारों को तिलांजलि देकर प्रसन्न और प्रफुल्लित रहना प्रारम्भ कर दो । पीछे कितना वीर्यनाश हो चुका है उसकी चिंता छोड़कर अब कैसे वीर्यरक्षण हो, इसके लिए उपाय करने हेतु कमर कस लो । **ध्यान रहे :** वीर्यशक्ति का दमन नहीं करना है, उसे ऊर्ध्वगामी बनाना है । ❐

अमृतबिंदु

✻ जिनकी बहुत तड़प होती है, प्यास होती है वे इसी जन्म में गुरु के गुरुतत्त्व को पूर्ण रूप से पाने का इरादा कर लेते हैं । जितना-जितना आप गुरुतत्त्व को पाने का इरादा करोगे, उतना-उतना आप अपनी बाहर की आसक्ति और गंदी आदतें छोड़ने में सफल होते जाओगे ।

✻ अपनी योग्यता अपने लिए ही नहीं है । आपको जो भी कुछ मिला है, बहुतों के सहयोग से मिला है । पेन, कागज, सड़कें आपने नहीं बनायीं, किसीके द्वारा बनायी हुई चीजों का आप उपयोग करते हैं, तो आपकी योग्यताएँ भी बहुतों के काम आनी चाहिए । आप बड़े-में-बड़े अपने आत्मा-परमात्मा से प्रीति करके अपनी योग्यताओं का उसीके नाते सदुपयोग करोगे, सबकी भलाई का भाव रखोगे तो आप बड़े आदमी बने रहोगे ।

– पूज्य बापूजी

ढूँढ़ो तो जानें

नीचे दी गयी वर्ग-पहेली की मदद से भगवान के अवतारों में से ११ नाम खोजिये ।

(१) रसातल में गयी पृथ्वी को निकाला
(२) ब्रह्मा-विष्णु-महेश का अंशावतार
(३) समुद्र-मंथन में मंदराचल को पीठ पर उठाया
(४) समुद्र से अमृत लेकर प्रकट हुए
(५) देवताओं को अमृतपान कराया
(६) हिरण्यकशिपु का अहं-मर्दन किया
(७) तीन पग भूमि माँगकर राजा बलि का उद्धार किया
(८) मर्यादापुरुषोत्तम
(९) यदुवंश में प्रकट हो पृथ्वी का भार उतारा
(१०) सिद्धों के स्वामी के रूप में सांख्य शास्त्र का उपदेश दिया
(११) ब्राह्मणों को क्षत्रियों के अत्याचार से मुक्त किया

म	क्ष	ष्ण	कृ	श्री	ग	ह	दि	ल	म	ई	नी
नु	प	न	च	प	रा	त	च	स	ष	हि	घ
र	र	दा	द	व	त	म	ब	पो	मो	न	अ
पा	शु	ग	ङ्क	त्ता	ति	कु	ष	क	अ	ल	क
म	रा	श	लिं	व	त्रे	ष	प	प्ति	त्स	च्छ	च्छि
र	म	श	र	श्रे	ठ	य	वा	अ	प	नी	र्थ
ग	शो	बा	र	ष	त्स	वे	प	म	रो	श्रे	हिं
र	त्रे	ति	हु	नि	ट	रि	डा	क	न	सा	ध
च्छ	नं	ज	मु	भ	श्र	से	स	ष	पु	न्वं	ऐ
क	वि	ल	मु	नि	श	ष्ण	व	रु	त	नृ	ग
ल	पि	पि	मो	य	ऋ	ति	ण	रि	स	सिं	घ
क	त	श्री	त्ता	त	र्ष	भ	क	क्र	बु	ह	र

अंक २३६ की 'ढूँढ़ो तो जानें' वर्ग-पहेली के उत्तर

(१) अनघ (२) कुरुश्रेष्ठ (३) कुरुनंदन (४) गुडाकेश (५) धनंजय (६) धनुर्धर (७) परंतप (८) पार्थ (९) भरतर्षभ (१०) महाबाहु

ज्ञानवर्धक पहेलियाँ

(१) निर्णयक्षमता बढ़ती जाये,
होता विकसित आज्ञाचक्र ।
शिवनेत्र का धरती से मेल हो,
आसन से होता क्रोध नष्ट ॥

(२) दूज का चाँद सदा चमकता,
गंगा भी झरती हरदम ।
सदा करते ध्यान फिर भी,
साँपों के हैं वे प्रियतम ॥

(३) इन्द्र-वरुण बन गये खिलौने,
बाप बन बैठा भगवान ।
न्याय की थे साक्षात् प्रतिमूर्ति,
देवता करें सद्गुण-बखान ॥

(४) कोई न किसीको सुख-दुःख देता,
अपने-अपने कर्मों का फल लेता ।
रामायण की है सुंदर चौपाई,
कहो किसके प्रति कही मेरे भाई ॥

चौपाई : काहु न कोउ सुख दुख कर दाता ।
निज कृत करम भोग सबु भ्राता ॥

अमृतबिंदु

✻ जो ईश्वर सर्वदा है, वह अब भी है । जो सर्वत्र है, वह यहाँ भी है । जो सबमें है, वह तुममें भी है और जो पूरा है, वह तुममें भी पूरा-का-पूरा है । उस 'एक' को जिसने पा लिया, उसने सब पा लिया और उस 'एक' को छोड़कर सब कुछ जिसने सँभाला, उसका सब कुछ रहा नहीं ।

✻ भूत व भविष्य जिन कल्पनाओं से बनते हैं, उनका आधार वही आत्मा-परमात्मा है । **हरि ॐ तत् सत्, और सब गपशप ।**

✻ जिसका इष्टमंत्र मजबूत होता है उसका अनिष्ट कोई सोच नहीं सकता व सोचे तो वह सफल हो नहीं सकता । - पूज्य बापूजी

भगवद्भक्त राजा पृथु

(गतांक से आगे)

महाराज पृथु ने बड़ी श्रद्धा और प्रेमपूर्वक सनकादि मुनियों से कहा : ''मुनीश्वरो ! आपके दर्शन तो योगियों को भी दुर्लभ हैं। मेरा पुण्योदय हुआ है जो मुझे स्वतः आपका दर्शन प्राप्त हुआ।

इस दृश्य-प्रपंच के कारण महत्तत्त्व आदि यद्यपि सर्वगत हैं तो भी वे सर्वसाक्षी आत्मा को नहीं देख सकते। इसी प्रकार यद्यपि आप समस्त लोकों में विचरते रहते हैं तो भी अनधिकारी लोग आपको देख नहीं पाते। जिन घरों में कभी भगवद्भक्तों (संतों) के परम पवित्र चरणोदक के छींटे नहीं पड़े, वे सब प्रकार की ऋद्धि-सिद्धियों से भरे होने पर भी ऐसे वृक्षों के समान हैं जिन पर साँप रहते हैं।

स्वामियो ! हम लोग अपने कर्मों के वशीभूत होकर विपत्तियों के क्षेत्ररूप इस संसार में पड़े हुए केवल इन्द्रियसंबंधी भोगों को ही परम पुरुषार्थ मान रहे हैं। सो क्या हमारे उद्धार का कोई उपाय है ? आप लोगों से कुशल-प्रश्न करना उचित नहीं है क्योंकि आप निरंतर आत्मा में ही रमण करते हैं। आपमें 'यह कुशल है और यह अकुशल है' इस प्रकार की वृत्तियाँ कभी होती ही नहीं। आप संसार-अग्नि से संतप्त जीवों के परम सुहृद हैं, अतः मैं यह पूछना चाहता हूँ कि इस संसार में मनुष्य का किस प्रकार सुगमता से कल्याण हो सकता है ? यह निश्चित है कि जो आत्मवान पुरुषों में 'आत्मा' रूप से प्रकाशित होते हैं और उपासकों के हृदय में अपने स्वरूप को प्रकट करते हैं, वे अजन्मा भगवान नारायण ही भक्तों पर कृपा करने के लिए आप जैसे सिद्ध पुरुषों के रूप में इस पृथ्वी पर विचरा करते हैं।''

श्री सनत्कुमारजी ने कहा : ''राजन् ! भगवान के चरणकमलों के गुणानुवाद में अवश्य ही आपकी अविचल प्रीति है। हर किसीको इसका प्राप्त होना बहुत कठिन है और प्राप्त हो जाने पर यह हृदय के भीतर रहनेवाले उस वासनारूप मल को सर्वथा नष्ट कर देती है जो और किसी उपाय से जल्दी नहीं छूटता। शास्त्र जीवों के कल्याण के लिए भलीभाँति विचार करनेवाले हैं। उनमें आत्मा से भिन्न देहादि के प्रति वैराग्य तथा अपने आत्मस्वरूप निर्गुण ब्रह्म में सुदृढ़ अनुराग होना - यही कल्याण का साधन निश्चित किया गया है।

शास्त्रों का यह भी कहना है कि गुरु व शास्त्र के वचनों में विश्वास रखने से, भागवत धर्मों का आचरण करने से, तत्त्वजिज्ञासा से, ज्ञानयोग की निष्ठा से, योगेश्वर श्रीहरि की उपासना से, भगवान की पावन कथाओं को सुनने से, धन व इन्द्रियों के भोगों में रत लोगों की गोष्ठी में प्रेम न रखने से, उन्हें प्रिय लगनेवाले पदार्थों का आसक्तिपूर्वक संग्रह न करने से, भगवद्गुणामृत का पान करने के सिवा अन्य समय आत्मा में ही संतुष्ट रहते हुए एकांत-सेवन में प्रेम रखने से, किसी भी जीव को कष्ट न देने से, निवृत्तिनिष्ठा से, आत्महित का अनुसंधान करते रहने से, श्रीहरि के पवित्र चरित्ररूप श्रेष्ठ अमृत का आस्वादन करने से, निष्काम भाव से यम-नियमों का पालन करने से, कभी किसीकी निंदा न करने से, योगक्षेम के लिए प्रयत्न न करने से, शीतोष्णादि द्वन्द्वों को सहन करने से, भक्तजनों के कानों को सुख देनेवाले श्रीहरि के गुणों का बार-बार वर्णन करने से और बढ़ते हुए भक्तिभाव से मनुष्य को कार्य-कारणरूप सम्पूर्ण जड़ प्रपंच से वैराग्य हो जाता है और आत्मस्वरूप निर्गुण परब्रह्म में अनायास ही उसकी प्रीति हो जाती है।'' (क्रमशः) □

नर-तन पाकर न किया तो कब करोगे ?

– पूज्य बापूजी

तुम जितनी देर शांत बैठते हो, निःसंकल्प बैठते हो उतनी तुम्हारी आत्मिक ऊर्जा, आत्मिक ओरा, परमात्मिक शक्ति संचित होती है, तुम्हारा सामर्थ्य बढ़ता है ।

एक संत से किसीने कहा कि 'हम तो गृहस्थी हैं, संसारी हैं, हम तो एकांत में नहीं रह सकते, शक्तिसम्पन्न नहीं हो सकते ।' तो संत ने कहा कि 'आप एक लोटे दूध को सरोवर में अथवा पानी के एक बड़े बर्तन में डाल दो तो आपका दूध व्यर्थ हो जायेगा लेकिन दूध में थोड़ा-सा दही डालकर उसे जमाओ, थोड़ा एकांत दो । बाद में मथो और पानी से भरे हुए घड़े या सरोवर में वह मक्खन डालो तो तैरेगा । ऐसे ही थोड़ा समय भी तुम साधन-भजन करके अपने आनंदस्वरूप आत्मा का सुख लो तो फिर संसार के घड़े में आप व्यवहार करोगे तो भी नाचते-खेलते आनंद से सफल हो जाओगे, नहीं तो संसार आपको डुबा देगा । चिंता में, विकारों में, राग में, द्वेष में, भय में, रोग में डुबा देगा और अंत में जन्म-मरण के चक्कर में भी डुबा देगा ।'

'क्या करें, हम तो संसारी हैं' - ऐसा करके अपना आयुष्य नष्ट नहीं करना । तुम सचमुच परिश्रम से कमाते हो और बहुत मितव्ययिता से जीते हो तो तुम्हारा अधिकार है परम सुख पाने का । मनुष्य-चोले से श्रेष्ठतर कुछ भी नहीं है । ऐसा मनुष्य-जीवन पाकर आपने अगर ऊँचाइयों को नहीं छुआ तो फिर कब छुओगे ?

अब की बिछड़ी कब मिलेगी,
जो जाय पड़ेगी दूर ?

जो भूतकाल में हो गया सो हो गया, अभी से तुम शक्ति का संचय करो, आत्मानंद के स्वभाव में वृद्धि करो, बढ़ाओ ।

बिगड़ी जनम अनेक की सुधरहिं अब और आजु ।
तुलसी होहिं राम को राम भजि तजि कुसमाजु ॥

संत वाणी

गुरु की महिमा को कहै, शिव विरंचि नहिं जान ।
गुरु सतगुरु को चीन्हि के, पावै पद निरबान ॥
जाके सिर गुरु ज्ञान है, सोइ तरत भव मांहि ।
गुरु बिन जानो जन्तु को, कबहुँ मुक्ति सुख नाहिं ॥
स्नेह प्रेम गुरु चरण सों, जिहि प्रकार से होय ।
क्या नियरै क्या दूर सब, प्रेम भक्त सुख सोय ॥
– संत कबीरजी

सुन्दर सद्गुरु आपुतें मुक्त किये गृह कूप ।
कर्म कालिमा दूरि करि कीये शुद्ध स्वरूप ॥
सद्गुरु शब्द सुनाइ करि दीया ज्ञान विचार ।
सुन्दर सूर प्रकासिया मेट्या सब अंधियार ॥
सद्गुरु कही मरंम की हिरदै बैसी आइ ।
रीति सकल संसार की सुन्दर दई बहाइ ॥
– संत सुंदरदासजी

गुरु दादू देखत कटे, जीव की कोटि जंजीर ।
जन रज्जब मुक्ते किये, पाया पूरा पीर ॥
गुरु दादू का ज्ञान सुन, छूटें सकल विकार ।
जन रज्जब दुस्तर तिरहिं, देखैं हरि दीदार ॥
– संत रज्जबजी

गुरु बिन रंग न लागहीं, गुरु बिन ज्ञान न होय ।
कहें टेऊँ सत्गुरु बिना, मुक्ति न पावे कोय ॥
गुरु बिन प्रेम न ऊपजे, गुरु बिन जगे न भाग ।
कहें टेऊँ तांते सदा, गुरु चरनों में लाग ॥
प्रातःकाल जो सोवहीं, तां मन होय मलीन ।
रोग बढ़े आयू घटे, होय भाग से हीन ॥
– संत टेऊँरामजी

शरद ऋतु में पथ्य-अपथ्य

(शरद ऋतु : २२ अगस्त से २१ अक्टूबर)

शरद ऋतु में पित्त कुपित व जठराग्नि मंद रहती है, जिससे पित्त-प्रकोपजन्य अनेक व्याधियाँ उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। अतः इस ऋतु में पित्तशामक आहार लेना चाहिए।

पथ्य आहार : इस ऋतु में मधुर, कड़वा, कसैला, पित्तशामक तथा लघु मात्रा में आहार लेना चाहिए। अनाजों में जौ, मूँग, सब्जियों में पका पेठा, परवल, तोरई, गिल्की, पालक, खीरा, गाजर, शलगम, नींबू, मसालों में जीरा, हरा धनिया, सौंफ, हल्दी, फलों में अनार, आँवला, अमरूद, सीताफल, संतरा, पका पपीता, गन्ना, सूखे मेवों में अंजीर, किशमिश, मुनक्का, नारियल सेवनीय हैं। घी व दूध उत्तम पित्तशामक हैं।

शरद पूनम की रात को चन्द्रमा की शीतल चाँदनी में रखी दूध-चावल की खीर पित्तशामक, शीतल व सात्त्विक आहार है।

हितकर विहार : शरद ऋतु में रात्रि-जागरण व रात्रि-भ्रमण लाभदायी है। रात्रि-जागरण १२ बजे तक ही माना जाता है। अधिक जागरण कर दिन में सोने से त्रिदोष प्रकुपित होते हैं।

त्याज्य आहार-विहार : पित्त को बढ़ानेवाले खट्टे, खारे, तीखे, तले, पचने में भारी पदार्थ, बाजरा, उड़द, बैंगन, टमाटर, मूँगफली, सरसों, तिल, दही, खट्टी छाछ आदि के सेवन से बचें। अधिक भोजन, अधिक उपवास, अधिक श्रम, दिन में शयन, धूप का सेवन आदि वर्जित है।

कुछ विशेष प्रयोग :

✻ पित्तजन्य विकारों से रक्षा हेतु हरड़ में समभाग मिश्री मिलाकर दिन में १-२ बार सेवन करें। इससे रसायन के लाभ भी प्राप्त होते हैं।

✻ धनिया, सौंफ, आँवला व मिश्री समभाग लेकर पीस लें। १ चम्मच मिश्रण २ घंटे पानी में भिगोकर रखें फिर मसलकर पियें। इससे अम्लपित्त (एसिडिटी), उलटी, बवासीर, पेशाब व आँखों में जलन आदि पित्तजन्य अनेक विकार दूर होते हैं।

✻ एक बड़ा नींबू काटकर रातभर ओस में पड़ा रहने दें। सुबह उसका शरबत बनाकर उसमें काला नमक डाल के पीने से कब्ज दूर होता है।

✻ दस्त लगने पर सौंफ व जीरा समभाग लेकर तवे पर भून लें। ३ ग्राम चूर्ण दिन में तीन बार पानी के साथ लें। खिचड़ी में गाय का शुद्ध घी डाल के खाने से भी दस्त में आराम होता है।

पापनाशक, बुद्धिवर्धक स्नान

(पूज्य बापूजी की अमृतवाणी)

जो लोग साबुन या शैम्पू से नहाते हैं वे अपने दिमाग के साथ अन्याय करते हैं। इनसे मैल तो कटता है लेकिन इनमें प्रयुक्त रसायनों से बहुत हानि होती है। तो किससे नहायें ?

नहाने का साबुन तो लगभग १२५ से २०० रुपये किलो मिलता है। मैं तुमको घरेलू उबटन बनाने की युक्ति बताता हूँ। उससे नहाओगे तो साबुन से नहाने से सौ गुना ज्यादा फायदा होगा और सस्ता भी पड़ेगा। जो आप कर सकते हो, जिससे आपको फायदा होगा मैं वही बताता हूँ।

गेहूँ, चावल, जौ, तिल, चना, मूँग और उड़द - इन सात चीजों को समभाग लेकर पीस लो। फिर कटोरी में उस आटे का रबड़ी जैसा घोल बना लो। उसे सबसे पहले थोड़ा सिर पर लगाओ, ललाट पर त्रिपुंड लगाओ, बाजुओं पर,

नाभि पर, बाद में सारे शरीर पर मलकर ४-५ मिनट रुक के सूखने के बाद स्नान करो । यह पापनाशक और बुद्धिवर्धक स्नान होगा । इससे आपको उसी दिन फायदा होगा । आप अनुभव करेंगे कि 'आहा ! कितना आनंद, कितनी प्रसन्नता ! इतना फायदा होता है !'

होली, शिवरात्रि, एकादशी, अमावस्या या अपने जन्मदिन पर देशी गाय का मूत्र और गोबर अथवा केवल गोमूत्र रगड़कर स्नान करने से पाप नष्ट और स्वास्थ्य बढ़िया होता है । अगर गोमूत्र से सिर के बालों को भिगोकर रखें और थोड़ी देर बाद धोयें तो बाल रेशम जैसे मुलायम होते हैं ।

गोदुग्ध से बने दही को शरीर पर रगड़कर स्नान करने से रुपये-पैसे में बरकत आती है, रोजी-रोटी का रास्ता निकलता है ।

पुष्टिदायक सिंघाड़ा

सिंघाड़ा आश्विन-कार्तिक (अक्टूबर-नवम्बर) मास में आनेवाला एक लोकप्रिय फल है । कच्चे सिंघाड़े को दुधिया सिंघाड़ा भी कहते हैं । अधिकतर इसे उबालकर खाया जाता है । सिंघाड़े को फलाहार में शामिल किया गया है अतः इसकी मींगी सुखा-पीसकर आटा बना के उपवास में सेवन की जाती है ।

१०० ग्राम सिंघाड़े में पोषक तत्त्व :

	ताजा सिंघाड़ा	सूखा सिंघाड़ा
प्रोटीन (ग्राम)	४.७	१३.४
कार्बोहाइड्रेट्स (ग्राम)	२३.३	६९.८
कैल्शियम (मि.ग्रा.)	२०	७०
फास्फोरस (मि.ग्रा.)	१५०	४४०
आयरन (मि.ग्रा.)	१.३५	२.४

साथ ही इसमें भैंस के दूध की तुलना में २२ प्रतिशत अधिक खनिज व क्षार तत्त्व पाये जाते हैं ।

दाह, रक्तस्राव, प्रमेह, स्वप्नदोष, शरीर के क्षय व दुर्बलता में तथा पित्त प्रकृतिवालों को विशेष रूप से इसका सेवन करना चाहिए ।

औषधि-प्रयोग

गर्भस्थापक व गर्भपोषक : सिंघाड़ा सगर्भावस्था में अत्यधिक लाभकारी होता है । यह गर्भस्थापक व गर्भपोषक है । इसका नियमित और उपयुक्त मात्रा में सेवन गर्भस्थ शिशु को कुपोषण से बचाकर स्वस्थ व सुंदर बनाता है । यदि गर्भाशय की दुर्बलता या पित्त की अधिकता के कारण गर्भ न ठहरता हो, बार-बार गर्भस्राव या गर्भपात हो जाता हो तो सिंघाड़े के आटे से बने हलवे का सेवन करें ।

श्वेतप्रदर व रक्तप्रदर : श्वेतप्रदर में पाचनशक्ति के अनुसार २०-३० ग्राम सिंघाड़े के आटे से बने हलवे तथा रक्तप्रदर में इसके आटे से बनी रोटियों का सेवन करने से रोगमुक्ति के साथ शरीर भी पुष्ट होता है ।

मूत्रकृच्छता, पेशाब की जलन व मूत्रसंबंधी अन्य बीमारियों में सिंघाड़े के क्वाथ का प्रयोग लाभकारी है ।

धातु-दौर्बल्य : इसमें ५ से १० ग्राम सिंघाड़े का आटा गुनगुने मिश्रीयुक्त दूध के साथ सेवन करने से पर्याप्त लाभ होता है ।

सिंघाड़ा ज्ञानतंतुओं के लिए विशेष बलप्रद है ।

दाह, ज्वर, रक्तपित्त या बेचैनी : इनमें प्रतिदिन पाचनशक्ति के अनुसार १०-२० ग्राम सिंघाड़े के रस का सेवन करें ।

मात्रा : सिंघाड़ा-सेवन की उचित मात्रा ३ से ६ ग्राम है ।

सावधानियाँ : (१) सिंघाड़ा पचने में भारी होता है, अतः उचित मात्रा में ही इसका सेवन करना चाहिए । वात और कफ प्रकृति के लोग इसका सेवन अल्प मात्रा में करें ।
(२) कच्चा व आधा उबला सिंघाड़ा न खायें ।
(३) सिंघाड़ा खाकर तुरंत पानी न पियें ।
(४) कब्ज हो तो इसका सेवन न करें । □

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

२८ जुलाई को यमुना के पावन तट पर स्थित आध्यात्मिक स्पंदनों से परिपूर्ण **आगरा** आश्रम में हुए सत्संग में जहाँ एक ओर विद्यार्थियों ने सर्वांगीण विकास की कुंजियाँ प्राप्त कीं, वहीं साधकों ने जीवन को निर्दुःख बनाने की सरल युक्तियाँ भी पायीं। निर्दुःख होने का सरल मार्ग बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''आपके जीवन में ज्ञान, कर्म और भाव की शुद्धि 'गीता' ले आती है। बस, तीन की शुद्धि हो गयी तो आपका आत्मा और ईश्वर का आत्मा एक हो जायेगा, आप निर्दुःख हो जायेंगे।''

२९ जुलाई से १ अगस्त (सुबह) तक तीर्थराज **पुष्कर** में आयोजित ४ दिवसीय 'ध्यान-योग साधना शिविर' व पूनम-दर्शन कार्यक्रम में प्रथम दो दिन 'विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविर' में बापूजी ने देश के कोने-कोने से आये विद्यार्थियों को बुद्धि व मेधाशक्ति बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रयोग तो करवाये ही, साथ ही जीवन को उन्नत कर दिव्य बनाने का मार्ग भी प्रशस्त किया।

पुष्कर तीर्थ की महिमा बताते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''ब्रह्माजी ने यहाँ यज्ञ किया था, भगवान शिव यहाँ आये थे, रामजी भी आये थे और आशाराम तो वर्षों से ही आते हैं।''

श्रद्धालुओं की सुविधा को देखते हुए खुद परिश्रम सहन कर पूज्य बापूजी ने श्रावणी पूर्णिमा, राखी पूर्णिमा को एक ही दिन में पुष्कर, अहमदाबाद तथा बदरपुर (दिल्ली) इन ३ स्थानों पर दर्शन-सत्संग कार्यक्रम देकर भक्तों को निहाल कर दिया। इसी दिन जयपुर व दिल्ली हवाई-अड्डे पर भी श्रद्धालुओं ने पूज्यश्री के दर्शन का लाभ लिया।

१ अगस्त को **दोपहर ११.३० से १२.३०** तक **अहमदाबाद आश्रम** में पूर्णिमा-दर्शन सम्पन्न हुआ। दीनता-हीनता त्यागकर मनुष्य को अपनी महिमा और परमात्मा से अपनी अभिन्नता पहचानने का तात्त्विक सत्संग देते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''भगवान कहीं आकाश में बैठकर दुनिया बनाते हैं यह भ्रम निकाल देना। हम ही भगवान हैं और रोटी में से खून बनाते हैं। खून में से मन-बुद्धि बनाते हैं, मकान बनाते हैं। माँ के शरीर में हम ही दूध बनाते हैं, हम माता चैतन्य'।''

१ (दोप.) व २ अगस्त को **बदरपुर (दिल्ली)** में रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित सत्संग व पूनम-दर्शन कार्यक्रम में ऐसा जनसैलाब उमड़ा मानो भक्तों की बाढ़ आयी हो। यहाँ का नजारा देखते ही बनता था। गुरुपूर्णिमा द्वारा परिपुष्ट गुरु-शिष्य परम्परा को और अधिक पुष्टि प्रदान करनेवाली श्रावणी पूनम की महिमा बताते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''तुम्हारे जीवन में समता का माधुर्य, ज्ञान का प्रकाश, आत्मविकास का संकल्प और आत्मबल का प्रभाव विकसित करने की व्यवस्था और गुरु-शिष्य का संबंध प्रस्थापित होने के बाद शिष्य को जीवन में विघ्न-बाधाओं से सुरक्षित रहने की व्यवस्था देनेवाली पूनम है श्रावणी पूनम।'' रजोकरी आश्रम में ६ दिनों के एकांतवास के बाद बापूजी पहुँचे सूरत।

९ व १० अगस्त को **सूरत** में जन्माष्टमी के पावन पर्व पर लाखों श्रद्धालुओं ने माधुर्य-अवतार पूज्य बापूजी के सान्निध्य में माधुर्य-वर्षा का लाभ लिया तथा साधना में उन्नति के सोपान सर किये। यहाँ पूज्यश्री ने जहाँ एक ओर भक्तों को मटकीफोड़ कार्यक्रम के द्वारा मक्खन-मिश्री का प्रसाद खिलाया, वहीं दूसरी ओर मक्खनचोर भगवान श्रीकृष्ण के ६४ गुणों के आध्यात्मिक रहस्यरूपी महाप्रसाद को बाँटकर सबको आत्ममस्ती में झुमा दिया। यहाँ भारत के कोने-कोने तथा अमेरिका, दुबई, हाँगकाँग, अफ्रीका

आदि से आये भक्तों को गुरुज्ञान की कुंजियाँ देते हुए बापूजी ने कहा : ''भगवान श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होने का संदेश देती है । भगवान श्रीकृष्ण ने अपने जीवन से संदेश दिया है कि कैसी भी परिस्थिति हो दुःखी न हों, निराश न हो जाओ वरन् दुःखों के सिर पर पैर रखकर आनंद की बंसी बजाओ ।''

मुरादाबाद (उ.प्र.) के भक्तों की लम्बे समय की प्रार्थना फलीभूत हुई और ११ अगस्त की रात को बापूजी के अचानक आगमन से भक्तों के आनंद का पारावार न रहा । यहाँ **१२ (दोप.) व १३ (शाम)** को हुए सत्संग-कार्यक्रम में मनुष्य-जन्म की महत्ता बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''मनुष्य-जन्म दुर्लभ है, उसमें भी क्षणभंगुर है और ऐसे क्षणभंगुर जीवन में संतों का मिलना बड़ा दुर्लभ है । और संत मिल जायें तो उनमें श्रद्धा व अपने कार्य में तत्परता बड़ी दुर्लभ है । अगर तत्परता हो जाय, श्रद्धा हो जाय तो बेड़ा पार ! हनुमानजी तत्पर थे, बेड़ा पार हो गया न ! लक्ष्मण तत्पर थे, बेड़ा पार हो गया न !''

पूरे शहर में कर्फ्यु, तनावपूर्ण माहौल, चारों ओर सूनी सड़कें और सन्नाटा लेकिन बरेली आश्रम में बड़े आनंद में झूमते श्रद्धालु - यह दृश्य है **१५ अगस्त** को **बरेली (उ.प्र.)** में कर्फ्यु के दौरान हुए सत्संग का । एक दिवसीय सत्संग के बाद बरेली के माहौल में काफी सुधार हुआ । सर्वसुहृद भगवान की विलक्षणता, उनके अस्तित्व को स्वीकारने से होनेवाले लाभों को बताते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''जो 'भगवान हैं' ऐसा मानते हैं उनमें विलक्षण लक्षण आ जाते हैं । वे संसार के दुःखों से दबते नहीं और सुखों में फिसलते नहीं । विकारों में गिरते भी बच जाते हैं और कहीं फिसले तो भगवान क्षमा करके उन्हें उठा भी लेते हैं ।''

१६ अगस्त को **उझानी (उ.प्र.)** में हुए सत्संग में पूज्यश्री ने जीवमात्र को कल्याण के एकमात्र सेतु संतों तक पहुँचाने की ईश्वर की अद्भुत प्रक्रिया का वर्णन किया । आपश्री बोले : ''विकास भगवान की प्रक्रिया है । छोटे जीव को बड़ा खा जाता है लेकिन वह छोटा जीव फिर बड़ी-बड़ी योनियों में आता है और ऐसा करते-करते मनुष्य-शरीर में आता है और मनुष्य-शरीर में भगवान दुःख देकर या सुख देकर अथवा अक्ल देकर संतों के पास भेजते हैं । देर-सवेर गुरुकृपा से भगवान का साक्षात्कार करके लोग महान बन जाते हैं, संत बन जाते हैं ।''

सुगंधित फूलों-पत्तियों, औषधीय इत्र और सुगंधित तेलों की नगरी कही जानेवाली **बदायूँ (उ.प्र.)** में **१७ अगस्त** को पूज्यश्री ने 'वास्तविक चतुराई क्या है' यह समझाते हुए कहा : ''चतुराई यह नहीं है कि झूठ-कपट करके पैसे इकट्ठे कर लिये, मकान बना लिया, कुर्सी पर पहुँच गये । दुःखों पर पैर रखकर परम सुख में स्थित रहना और दूसरों को करना - यह चतुराई है ।''

प्रौद्योगिकी शिक्षा (आईटी) के क्षेत्र में प्राचीनकाल से अपना लोहा मनवानेवाली देवभूमि उत्तराखंड के प्रवेशद्वार **रूड़की** में **१९ अगस्त** को हुए सत्संग में बापूजी ने तकनीकी समझवाले हृदयों को भगवदीय समझ, शांति, आनंद व ज्ञान से भर दिया । पारमार्थिक उन्नति के बिना सांसारिक उन्नति बोझ है, इस बात पर ध्यान आकर्षित करते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''कल्याण करनेवाली कितनी भी सुंदर भौतिक परिस्थितियाँ हों लेकिन सूझबूझ और भगवान की भक्ति नहीं है तो आदमी शराबी-कबाबी, जुआरी और दुराचारी हो जायेगा ।''

२० (शाम) व २१ अगस्त (सुबह) को **सहारनपुर (उ.प्र.)** में सत्संग-कार्यक्रम के बाद पूज्यश्री पहुँचे भगवान श्रीकृष्ण की पावन नगरी **द्वारका (गुज.)** । द्वारका में पूज्यश्री के इस द्वितीय

आगमन पर यहाँ के संतों ने बापूजी का खूब स्वागत-अभिनंदन किया । **२३ (दोप.) व २४ (सुबह)** को सम्पन्न हुए सत्संग-कार्यक्रम में बापूजी ने नौका-विहार कार्यक्रम के साथ भक्तों को दीक्षा से भी लाभान्वित किया । सात मोक्षदायिनी पुरियों में से एक द्वारकापुरी की महिमा बताते हुए बापूजी ने कहा : ''पश्चिम की तरफ मुँह करके दोनों हाथ जोड़कर द्वारका का सुमिरन करते हुए जो स्नान करते हैं, उन्हें करोड़ों गुना फल मिलता है ।''

२५ (शाम) से २७ (सुबह) तक भगवान दत्तात्रेय की पावन भूमि **जूनागढ़ (गुज.)** में हुए सत्संग में गिरनार के साधु-समाज ने बापूजी का अभिनंदन किया । पूर्वनियोजित २ सत्रों का यह कार्यक्रम पूज्यश्री की करुणा-कृपा से ६ सत्रों के 'सत्संग-ध्यानयोग शिविर' में परिणत हुआ और जूनागढ़वासियों की वर्षों की तपस्या ज्ञान-ध्यान महायज्ञ के रूप में फलीभूत हुई ।

वासनाओं को मिटाने के लिए व्रत की महिमा बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''कोई-न-कोई व्रत लिये बिना जन्मों-जन्मों की वासना या तुच्छता नहीं छूटती । जिसके जीवन में व्रत नहीं, उस आदमी पर विश्वास करना खतरे से खाली नहीं है क्योंकि व्रत नहीं है तो वह दृढ़निश्चयी नहीं है । ऊँचा उठना है तो अपने जीवन में कोई-न-कोई व्रत-नियम होना चाहिए ।''

अकारण करुणा करनेवाले पूज्य बापूजी ने **२७ अगस्त** को बिना पूर्वघोषित कार्यक्रम के **राजकोट (गुज.)** आश्रम में दर्शन-सत्संग का लाभ देकर भक्तों को कृतार्थ किया ।

२८ से २९ अगस्त (दोप.) तक **मोरबी (गुज.)** में हुए सत्संग-कार्यक्रम में अचल धर्मनिष्ठ, दृढ़ संस्कृतिरक्षक व सच्चे ज्ञानपिपासु यहाँ के पुण्यात्माओं ने खूब धैर्य का परिचय देते हुए सत्संग, संकीर्तन, ध्यान आदि का लाभ लिया एवं सत्संग-प्रेम की अद्भुत मिसाल कायम की ।

मोरबी का सत्संग पूरा कर बापूजी ने **२९ अगस्त** की दोपहर हेलिकॉप्टर द्वारा **गोधरा (गुज.)** के लिए प्रस्थान किया । गोधरा में हेलिकॉप्टर नीचे उतारते समय ३० फुट की ऊँचाई पर हेलिकॉप्टर के पायलट ने उसका नियंत्रण खो दिया । असंतुलित होकर कुछ ही क्षणों में हेलिकॉप्टर जमीन पर आ गिरा और उसके तीन टुकड़े होकर पुर्जे दूर-दूर तक जा गिरे । हेलिकॉप्टर के पीछे के हिस्से में आग भी लग गयी थी । फिर भी बापूजी एवं पायलटसहित अन्य भक्तों को खरोंच तक नहीं आयी । इस अद्भुत घटना को देखकर दैवी शक्ति को न माननेवाले नास्तिक लोग भी कहने लगे, ''देखिये ऐसा चमत्कार, जो किसीने पिछले सौ सालों में भी नहीं देखा होगा ।'' (हेलिकॉप्टर दुर्घटना का विस्तृत विवरण पृष्ठ ४ पर)

दुर्घटना के कुछ ही मिनटों बाद पूज्यश्री सत्संग-पंडाल में सत्संग करने पधारे । बापूजी ने कहा : ''अगर भारतीय संस्कृति में मेरा जन्म नहीं होता और मुझे मंत्र-विज्ञान का पता नहीं होता तो आज देशभर में नहीं विश्वभर में करोड़ों-करोड़ों लोग बेचारे सिसक-सिसक के आँसू बहाते तथा न जाने क्या-क्या यातनाएँ उनके हृदय को झेलनी पड़तीं, ऐसा हादसा हुआ है । मैं ठीक-ठाक हूँ और मेरे साथ जो भी थे वे सब ठीक-ठाक हैं । और हम चाहते हैं आप भी हर परिस्थिति में ठीक-ठाक रहो ।''

ऐसी जानलेवा दुर्घटना को भी हँसते-खेलते अलविदा करके आये अपने हृदयेश्वर पूज्य बापूजी को पूर्ण स्वस्थ, सम, प्रसन्न व नित्य की तरह अलमस्त देखकर भक्तों के आनंद का पारावार न रहा और खूब देर तक ''सद्गुरु भगवान की जय'' के जयकारों से आसमान गूँजता रहा ।

विभिन्न सम्प्रदायों के साधु-संतों, विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों, पूर्व राष्ट्रपति आदि अन्य

गणमान्य जनों ने एवं विदेशों से भी अनेक गणमान्य लोगों ने दूरभाष द्वारा दुर्घटना की जानकारी ली एवं पूज्यश्री की सकुशलता का समाचार पाकर इसे एक चमत्कार बताते हुए पूज्यश्री की दीर्घायु की शुभ भावनाएँ व्यक्त कीं। अखिल भारतीय आतंकवाद निरोधक मोर्चा के प्रमुख श्री मनिंदरजीत सिंह बिट्टा ने सत्संग में पहुँचकर पूज्यश्री के सत्संग-दर्शन का लाभ लिया एवं अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। (वक्तव्य पृष्ठ ८ पर)

३१ अगस्त की सुबह ८ बजे तक पूर्णिमा-दर्शन देकर बापूजी पहुँचे **गाजियाबाद (उ.प्र.)**। जहाँ लाखों की संख्या में जनमेदनी गुरुदेव के दर्शन के लिए पलकें बिछाये बैठी थी। पूनम व्रतधारियों के साथ ही 'विश्व हिन्दू परिषद' के मुख्य संरक्षक-मार्गदर्शक व पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल, जो दो दिन पहले अमेरिका में थे, वे बापूजी के दर्शन के लिए दौड़े-दौड़े चले आये। सिंहलजी ने भारत के संतों के खिलाफ हो रहे अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र पर प्रकाश डालकर देश के राजनेताओं को उन षड्यंत्रकारियों का मोहरा न बनने की हिदायत दी। (वक्तव्य पृष्ठ ६ पर) सत्संग के तीसरे दिन भाजपा के वरिष्ठ सांसद, शीर्ष नेता एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने पूज्यश्री के सत्संग में पहुँचकर पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग का लाभ लिया। (वक्तव्य पृष्ठ ७ पर) ❐

पूज्य बापूजी के आगामी सत्संग-कार्यक्रम

दिनांक : २९ (दोप.) व ३० सितम्बर
स्थान : सेक्टर-१२, कोर्ट, टाउन पार्क के पास, फरीदाबाद (हरियाणा)
सम्पर्क : ९८१८८६५५५६, ९८१०३९९०४३

दिनांक : २४ से २८ नवम्बर (सुबह)
स्थान : नवलखी मैदान, राजमहल रोड, बड़ौदा (गुजरात)
सम्पर्क : ९४२८७६११९९, ९८२५८७९३३०

तुलसी

✻ गले में तुलसी की माला धारण करने से जीवनशक्ति बढ़ती है, बहुत-से रोगों से मुक्ति मिलती है। तुलसी की माला पर भगवन्नाम-जप करना कल्याणकारी है।

✻ मृत्यु के समय मृतक के मुख में तुलसी के पत्तों का जल डालने से वह सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर भगवान विष्णु के लोक में जाता है।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृति खंड : २१.४२)

✻ अग्नि-संस्कार में तुलसी की लकड़ी शरीर पर रखने से नीच योनियों से रक्षा सुनिश्चित है।

✻ तुलसी के पत्ते सूर्योदय के पश्चात् ही तोड़ें। दूध में तुलसी के पत्ते नहीं डालने चाहिए तथा दूध के साथ खाने भी नहीं चाहिए।

✻ पूर्णिमा, अमावस्या, द्वादशी और सूर्य-संक्रांति के दिन, मध्याह्नकाल, रात्रि, दोनों संध्याओं के समय और अशौच के समय, तेल लगा के, नहाये-धोये बिना जो मनुष्य तुलसी का पत्ता तोड़ता है, वह मानो भगवान श्रीहरि का मस्तक-छेदन करता है।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृति खंड : २१.५०-५१)

✻ रोज सुबह खाली पेट तुलसी के ५-७ पत्ते खूब चबाकर खायें व ऊपर से ताँबे के बर्तन में रात का रखा एक गिलास पानी पियें। इस प्रयोग से बहुत लाभ होता है। यह ध्यान रखें कि तुलसी के पत्तों के कण दाँतों के बीच न रह जायें।

✻ बासी फूल व बासी जल पूजा के लिए वर्जित हैं किंतु तुलसीदल व गंगाजल बासी होने पर भी वर्जित नहीं हैं। **(स्कंद पुराण, वै. खंड, मा.मा. : ८.९)**

✻ तुलसी ब्रह्मचर्य की रक्षा में एवं यादशक्ति बढ़ाने में भी अनुपम सहायता करती है।

✻ तुलसी-बीज का लगभग एक चुटकी चूर्ण रात को पानी में भिगोकर सुबह खाली पेट लेने से वीर्यरक्षण में बहुत-बहुत मदद मिलती है।

इटावा (उ.प्र.)
जब बरस रहा दिल में ऋषि-अमृत तो इन्द्र की वर्षा से कौन हिले !
पूज्य बापूजी के सत्संग में उमड़ा जनसागर
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
आगरा (उ.प्र.)
शिवपुरी (म.प्र.)
श्योपुर (म.प्र.)

कृष्णतत्त्व में जगे पूज्य बापूजी के सान्निध्य-लाभ हेतु
जन्माष्टमी पर्व पर उमड़ा जनसैलाब
RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2012
जन्माष्टमी महोत्सव, सूरत
पूर्णिमा दर्शन-सत्संग, पुष्कर (राज.)
पूर्णिमा दर्शन-सत्संग, बदरपुर (दिल्ली)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month * Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.
ऋषि प्रसाद ई-मैगजीन
बस www.rishiprasad.org पर
लॉग-इन करें और पत्रिका तैयार !
विशेष आकर्षण :- * शीघ्र एवं सुलभ प्राप्ति * क्रेडिट कार्ड,
डेबिट कार्ड, एटीएम कार्ड तथा नेट बैंकिंग द्वारा ऑनलाइन सदस्यता-राशि जमा करने की सुविधा
* आकर्षक बहुरंगी डिजाइन * मनभावन प्रस्तुति
अब इंटरनेट के द्वारा आप कहीं भी ऋषि प्रसाद की ई-मैगजीन तथा मुद्रित प्रति के भी ऑनलाइन सदस्य बन सकते हैं।